

ग्राहकों के लिए भी भुगतान व्यवस्था बदलने की आशंका, यूपीआई पर एमडीआर शुल्क के फैसले पर पुनर्विचार की मांग

थोक व्यापारियों पर बढ़ सकता है आर्थिक बोझ

गोपाल, यश भारत ।

यूपीआई भुगतान पर प्रस्तावित एमडीआर शुल्क को लेकर व्यापारियों ने सरकार से निर्णय पर पुनर्विचार करने की मांग की है। भोपाल किराना व्यापारी महासंघ के महामंत्री विवेक साहू का कहना है कि डिजिटल भुगतान आज व्यापार और आम लोगों की रोजमर्रा की जरूरत बन चुका है। ऐसे में यूपीआई लेनदेन पर अतिरिक्त शुल्क लागू होने से व्यापारियों के साथ ग्राहकों के सामने भी नई व्यावहारिक दिक्कतें खड़ी हो सकती हैं।

साहू के अनुसार 15 अक्टूबर से 2

हजार रुपये से अधिक के यूपीआई भुगतान पर 0.4 प्रतिशत एमडीआर शुल्क लागू होने का प्रस्ताव है। थोक कारोबार में मुनाफे का अंतर पहले से ही सीमित रहता है। ऐसे में प्रत्येक बड़े डिजिटल भुगतान पर लगने वाला अतिरिक्त शुल्क व्यापारियों की लागत बढ़ा सकता है और इसका असर उनके लाभ पर पड़ने की आशंका है।

बड़े भुगतान में बढ़ सकती है परेशानी

व्यापारियों का कहना है कि थोक बाजार में बड़ी राशि के भुगतान के

डिजिटल भुगतान को बढ़ावा देने की अपील

व्यापारियों ने कहा है कि डिजिटल भुगतान को बढ़ावा देने से व्यापार में पारदर्शिता और भुगतान की सुविधा बढ़ी है। व्यापारी और ग्राहक दोनों यूपीआई व्यवस्था के आदी हो चुके हैं। ऐसे में नई शुल्क व्यवस्था लागू करने से पहले उसके व्यापक प्रभावों पर विचार किया जाना चाहिए। उन्होंने प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी और वित्त मंत्री निर्मला सीतारमण से आग्रह किया कि व्यापारियों और आम उपभोक्ताओं के हितों को ध्यान में रखते हुए एमडीआर शुल्क से जुड़े प्रस्ताव की समीक्षा की जाए। उनका कहना है कि ऐसी व्यवस्था बनाई जानी चाहिए, जिसमें डिजिटल भुगतान को बढ़ावा भी मिले और व्यापारियों पर अतिरिक्त वित्तीय दबाव भी न पड़े।

लिए यूपीआई का इस्तेमाल तेजी से बढ़ा है। ग्राहक भी नकद रखने के बजाय मोबाइल से तत्काल भुगतान को सुविधाजनक मानते हैं। यदि 2 हजार रुपये से अधिक के लेनदेन पर शुल्क लागू होता है तो कुछ व्यापारी ऐसे भुगतान स्वीकार करने के दूसरे विकल्प तलाश सकते हैं। साहू ने बताया कि शुल्क लागू होने की स्थिति में कुछ व्यापारी 15 अक्टूबर के बाद 2 हजार रुपये से अधिक के यूपीआई भुगतान स्वीकार नहीं करने पर भी विचार कर रहे हैं। इससे ग्राहकों को नकद या अन्य भुगतान माध्यम अपनाने पड़ सकते हैं। खासकर नियमित खरीदारी करने वाले ग्राहकों और छोटे कारोबारियों के लिए भुगतान का तरीका बदलना असुविधाजनक हो सकता है।

एमवाय अस्पताल से लेकर मेडिकल कॉलेजों के निजी संचालन तक उठाए

स्वास्थ्य व्यवस्था को लेकर कांग्रेस ने सरकार को घेरा

मध्य प्रदेश की स्वास्थ्य व्यवस्था को लेकर कांग्रेस ने भाजपा सरकार पर निशाना साधते हुए प्रदेश में स्वास्थ्य सेवाओं की स्थिति पर सवाल उठाए हैं। कांग्रेस प्रवक्ता अभय दुबे ने आरोप लगाया कि प्रदेश में स्वास्थ्य सेवाओं से जुड़े कई गंभीर मामले सामने आए हैं और सरकार की कार्यप्रणाली को लेकर लगातार सवाल खड़े हो रहे हैं। दुबे ने इंदौर के एमवाय अस्पताल में नवजात बच्चों की मौत कोल्ट्रफ कफ सिरप से बच्चों की मौत इंदौर के भागीरथपुरा में दूषित पानी से हुई मौतों बालाघाट में बच्चों की मौत और सागर में जहरीली शराब कांड का उल्लेख करते हुए सरकार से स्वास्थ्य व्यवस्था को लेकर जवाब मांगा।

किडनी रैकेट और पैथोलॉजी मामले पर भी जवाब मांगा

कांग्रेस प्रवक्ता ने इंदौर में सामने आए कथित किडनी रैकेट और साईंस हाउस पैथोलॉजी मामले को लेकर भी सरकार से स्थिति स्पष्ट करने की मांग की। उन्होंने कहा कि स्वास्थ्य क्षेत्र से जुड़े मामलों में तथ्यों को सामने लाने और जिम्मेदारी तय करने की आवश्यकता है। कांग्रेस ने प्रदेश के नौ मेडिकल कॉलेजों को निजी हाथों में संचालन के लिए दिए जाने की प्रक्रिया पर भी सवाल उठाए। पार्टी ने पूछा कि ऐसी व्यवस्था लागू होने पर गरीब मरीजों को मिलने वाले मुफ्त इलाज और एससी एसटी तथा ओबीसी वर्गों के आरक्षण की क्या व्यवस्था रहेगी। अभय दुबे ने सरकार से मेडिकल कॉलेजों के संचालन से जुड़ी पूरी प्रक्रिया में पारदर्शिता बरतने तथा स्वास्थ्य व्यवस्था को लेकर कांग्रेस द्वारा उठाए गए सवालों पर स्पष्ट जवाब देने की मांग की है।

बाबा रामदेव जी की दसवीं पर निकली शोभायात्रा

आष्टा, यश भारत । बाबा रामदेव जी की दसवीं नगर में श्रद्धा और उल्लास के साथ मनाई गई। विभिन्न मंदिरों में दिनभर पूजा-अर्चना और आरती हुई। पार्वती नगर और अलीपुर क्षेत्र में बैंड-बाजों के साथ शोभायात्रा निकाली गई, जिसमें बड़ी संख्या में श्रद्धालु शामिल हुए। बुधवार गंज स्थित मंदिर में सकल हिंदू समाज के पदाधिकारियों ने दर्शन किए और मानस भवन में आयोजित भंडारे में प्रसादी ग्रहण की। समाज अध्यक्ष नरेंद्र कुशवाहा ने धार्मिक आयोजनों के माध्यम से नई पीढ़ी को संस्कारों और परंपराओं से जोड़ने का आह्वान किया।

सांदीपनि विद्यालय में मनाया उमंग दिवस

आष्टा, यश भारत । सांदीपनि शासकीय उच्चतर माध्यमिक विद्यालय में उमंग दिवस मनाया गया। कार्यक्रम में 3 हजार से अधिक विद्यार्थियों ने सकारात्मकता की शपथ ली। विद्यार्थियों को मानसिक स्वास्थ्य, तनाव प्रबंधन, आत्मरक्षा और सोशल मीडिया के प्रभावों के प्रति जागरूक किया गया। कहानी, प्रश्नोत्तरी और खेल गतिविधियां आयोजित हुईं। उत्कृष्ट प्रदर्शन करने वाले विद्यार्थियों को पुरस्कार देकर सम्मानित किया गया। प्राचार्य सितवत खान ने विद्यार्थियों से अपनी समस्याएं शिक्षकों और अभिभावकों से साझा करने की अपील की।

स्वस्थ रहने की कला सीखने देशभर से आए साधक आरोग्य केन्द्र में पांच दिवसीय शिविर

हिरदाराम नगर.

आरोग्य केन्द्र द्वारा पाँच दिवसीय रोग निवारण एवं प्रशिक्षण शिविर आयोजित किया जा रहा है, जिसमें देशभर से आए साधक प्राकृतिक उपचार, योग, प्राकृतिक एवं अपक्व आहार, फिजियोथेरेपी, एक्स्प्रेसर, एक्स्पून्कर, शिरोधारा और पोटली मसाज के माध्यम से स्वास्थ्य लाभ ले रहे हैं। मेडिकल डायरेक्टर डॉ. गुलाब राय टेवानी ने व्याख्यान में बताया कि संस्था पिछले 37 वर्षों से किफायती एवं दवा-रहित चिकित्सा प्रदान कर रही है। इस शिविर का मुख्य उद्देश्य 'प्राकृतिक चिकित्सा से संपूर्ण स्वास्थ्य लाभ' प्राप्त करना है। साधकों की गैरआपत्ति आहार (रसाहार, फलाहार), उपवास, योग और पंचतत्वों (पृथ्वी, जल, अग्नि, वायु, आकाश) द्वारा शरीर के शुद्धिकरण की कला सिखाई जा रही

है। डॉ. टेवानी ने जोर दिया कि गलत आहार और अस्वस्थ जीवनशैली ही बीमारियों की जड़ हैं। शरीर से टॉक्सिन्स बाहर निकालने के चार मुख्य मार्ग हैं—मल, मूत्र, पसीना और श्वास। सही आहार, सकारात्मक सोच, मानसिक-

शारीरिक डिटॉक्स और डिजिटल डिटॉक्स (मोबाइल व लैपटॉप से परहेज) अपनाकर व्यक्ति स्वयं का चिकित्सक बन सकता है। समाज को जागरूक करने के उद्देश्य से शिविर के साथ 'हेल्थ प्रोमोटर सर्टिफिकेट कोर्स' भी शुरू किया गया है, जिससे साधक प्राकृतिक चिकित्सा सीखकर अपने परिवार व समाज को स्वस्थ रख सकें। विशेष गतिविधियाँ एवं सत्र: दिनचर्या: योग, योगिक क्रियाएँ, ध्यानात्मक सत्र, आनंद मेला और हरी पत्तियों के जूस का सेवन।

संस्कार विद्यालय में हुई थी प्रतियोगिता

हिरदाराम नगर.

संस्कार विद्यालय में खादी और ग्रामोद्योग को बढ़ावा देने के लिए निबंध प्रतियोगिता का आयोजन किया गया, जिसके विजेताओं को पुरस्कृत कर सम्मानित किया गया। प्रतियोगिता में निशा उतवानी ने प्रथम, समीक्षा मेहरा ने द्वितीय तथा प्रीति वाधवानी ने तृतीय स्थान प्राप्त किया। विजेता प्रतिभागियों को खादी एवं ग्रामोद्योग आयोग के वरिष्ठ अधिकारियों अनील टिलवानी, अर्चना पाल और संजय जैन तथा संस्था के अध्यक्ष सुशील वासवानी एवं सचिव बसंत चेलानी द्वारा पुरस्कृत किया गया। इस अवसर पर सभी उपस्थित लोगों ने खादी एवं ग्रामोद्योग को सम्मान देने और इसे अपने दैनिक जीवन में अपनाने का संकल्प लिया। समारोह के प्रारंभ में चेलानी ने कहा कि विद्यार्थियों में स्वदेशी की भावना जगाने और खादी के महत्व को समझाने के लिए ऐसे कार्यक्रमों का समय-समय पर आयोजन बेहद आवश्यक है। टिलवानी ने खादी के महत्व पर प्रकाश डालते हुए बताया

खादी-ग्रामोद्योग पर निबंध प्रतियोगिता में निशा प्रथम व समीक्षा रहे द्वितीय

संकल्प लिया। समारोह के प्रारंभ में चेलानी ने कहा कि विद्यार्थियों में स्वदेशी की भावना जगाने और खादी के महत्व को समझाने के लिए ऐसे कार्यक्रमों का समय-समय पर आयोजन बेहद आवश्यक है। टिलवानी ने खादी के महत्व पर प्रकाश डालते हुए बताया

कि वर्ष 2023 से प्रतिवर्ष खादी महोत्सव मनाया जा रहा है। इस वर्ष भी 17 सितंबर से 17 अक्टूबर तक खादी महोत्सव का आयोजन हो रहा है, जिसके तहत प्रतिदिन खादी का प्रचार-प्रसार, शपथ ग्रहण, चरखा प्रदर्शन और स्वदेशी उत्पादों की जानकारी प्रदान करने जैसे कार्य

किए जा रहे हैं। वासवानी ने कहा कि ऐसे आयोजनों से निश्चित ही खादी ग्रामोद्योग को बढ़ावा मिलेगा और देश का विकास होगा। अतिथियों ने विद्यालय द्वारा मिले सहयोग की प्रशंसा की। अंत में प्राचार्य आर.के. मिश्रा ने सभी का आभार व्यक्त किया

बनियाखेड़ी में जलभराव से कीचड़ और गंदगी का अंबार, अधूरा मंगल भवन भी सवालों के घेरे में, मुक्तिधाम वर्षों से बंदहाल

गोंदलवाड़ा पंचायत में विकास कार्यों पर सवाल, सड़क बने बिना निकल गई राशि

बनखेड़ी, यश भारत ।

सरकार अंतिम छोर के व्यक्ति तक योजनाओं का लाभ पहुंचाकर उसे आत्मनिर्भर बनाने और गांवों को विकास की मुख्यधारा से जोड़ने के लिए लगातार प्रयास कर रही है, लेकिन जमीनी स्तर पर जिम्मेदारों की कथित लापरवाही इन प्रयासों पर सवाल खड़े कर रही है। ऐसा ही मामला जनपद पंचायत बनखेड़ी की ग्राम पंचायत गोंदलवाड़ा के अंतर्गत आने वाले बनियाखेड़ी गांव से सामने आया है। गांव में जल निकासी की समुचित व्यवस्था नहीं होने से जगह-जगह पानी जमा है। इससे कीचड़ और गंदगी की स्थिति बनी हुई है तथा ग्रामीणों को आवागमन में परेशानी का सामना करना पड़ रहा है। ग्रामीणों का कहना है कि मूलभूत सुविधाओं से जुड़े कार्यों पर अपेक्षित ध्यान नहीं दिया जा रहा है।

सड़क बनी नहीं, राशि निकलने का आरोप

सबसे गंभीर सवाल पंचायत द्वारा सीसी रोड निर्माण के नाम पर राशि निकाले जाने को लेकर उठ रहे हैं। उपलब्ध जानकारी के मुताबिक शासकीय पंचायत दर्पण पोर्टल पर सीसी रोड निर्माण के नाम से डेढ़ लाख रुपये

से अधिक की राशि निकाली गई है, जबकि गांव में संबंधित सीसी रोड का निर्माण नजर नहीं आ रहा है। ऐसे में सवाल उठता है कि जब सड़क बनी ही नहीं तो निर्माण कार्य की राशि किस आधार पर निकाली गई?

अधूरा मंगल भवन, निकल गई छह लाख की राशि

इसी तरह बनियाखेड़ी गांव में मंगल भवन का निर्माण भी सवालों के घेरे में है। ग्रामीणों के अनुसार भवन का निर्माण अधूरा पड़ा है

और निर्माण की गुणवत्ता को लेकर भी सवाल उठ रहे हैं। जानकारी के मुताबिक इसके लिए करीब छह लाख रुपये की राशि निकाली जा चुकी है।

मुक्तिधाम की हालत भी बंदहाल

बनियाखेड़ी गांव का मुक्तिधाम भी लंबे समय से बंदहाल का शिकार बताया जा रहा है। यहां व्यवस्थाओं और सौंदर्यकरण की स्थिति संतोषजनक नहीं होने से ग्रामीण

अपनी निजी भूमि में अंतिम संस्कार करने को मजबूर है। ग्रामीणों का सवाल है कि जब गांवों के विकास और स्वच्छता के लिए लगातार योजनाएं संचालित हो रही हैं, तो वर्षों से मुक्तिधाम की स्थिति में सुधार क्यों नहीं हुआ।

सरपंच पति बोले—सड़क निर्माण हुआ ही नहीं

मामले में सरपंच पति बाबूलाल ने बताया कि पंचायत द्वारा नाली निर्माण का कार्य

कराया गया है। उन्होंने स्पष्ट रूप से कहा कि गांव में कहीं भी सड़क निर्माण का कार्य नहीं कराया गया है। उनके इस बयान के बाद सीसी रोड निर्माण के नाम पर पोर्टल में दर्ज राशि को लेकर सवाल और गंभीर हो गए हैं। गांव की सफाई के लिए विदेश दिए गए हैं। पंचायत में किए गए कार्यों की जांच कराई जाएगी। बगैर सड़क निर्माण के राशि कैसे निकली, इसकी भी जांच की जाएगी। जांच में दोषी पाए जाने पर निश्चित रूप से कार्रवाई की जाएगी।

नरेंद्र सिंह मेवाड़ा, सीईओ जनपद पंचायत बनखेड़ी

बाबा रामदेव जी के चल समारोह में शामिल हुए विधायक

आष्टा, यश भारत ।

अलीपुर के मीरपुरा स्थित बाबा रामदेव मंदिर से दसवीं के अवसर पर चल समारोह निकाला गया। विधायक गोपालसिंह इंजीनियर भी इसमें शामिल हुए। जनपद चौराहे पर हिंदू उत्सव समिति ने शोभायात्रा का स्वागत किया। मंदिर परिसर में आयोजित कार्यक्रम में विधायक ने टीन शेड निर्माण के लिए 5 लाख और माताजी के चबूतरे के लिए 50 हजार रुपये देने की घोषणा की। उन्होंने कहा कि धार्मिक आयोजन सामाजिक एकता और सद्भाव को मजबूत करते हैं।

एमपी में 27% ओबीसी आरक्षण रोकने का पाप कमलनाथ सरकार ने किया, अपनी हिंदी की चिढ़ी पढ़कर दिखाएं राहुल

राहुल गांधी की चिढ़ी पर मंत्री सारंग का पलटवार

गोपाल यश भारत ।

मध्यप्रदेश में 27 प्रतिशत ओबीसी आरक्षण के मुद्दे पर कांग्रेस नेता राहुल गांधी द्वारा मुख्यमंत्री को लिखी गई चिढ़ी को लेकर चिकित्सा शिक्षा मंत्री विश्वास सारंग ने तीखा पलटवार किया है। सारंग ने आरोप लगाया कि प्रदेश में ओबीसी आरक्षण को रोकने की स्थिति कांग्रेस की तत्कालीन कमलनाथ सरकार के कार्यकाल में बनी और सरकार ने अदालत में इस मामले में प्रभावी ढंग से पक्ष नहीं रखा। मंत्री सारंग ने कहा कि मध्यप्रदेश की भाजपा सरकार 27 प्रतिशत ओबीसी आरक्षण देने के

लिए पहले से प्रतिबद्ध है। उन्होंने राहुल गांधी की चिढ़ी को लेकर कहा कि उन्हें प्रदेश के इतिहास और वर्तमान परिस्थितियों की पूरी जानकारी नहीं है और वे कांग्रेस नेताओं द्वारा तैयार किए गए पत्रों पर हस्ताक्षर कर देते हैं।

राहुल को खुली चुनौती, कहा पत्र पढ़कर दिखाएं

सारंग ने राहुल गांधी को चुनौती देते हुए कहा कि वे अपनी ही हिंदी में लिखी चिढ़ी को अक्षरशः पढ़कर सोशल मीडिया पर साझा करके दिखाएं। उन्होंने कहा कि यदि राहुल गांधी ऐसा कर देते हैं तो वे उन्हें इनाम देंगे। मंत्री ने

राहुल गांधी पर मुद्दों की पर्याप्त जानकारी के बिना राजनीति करने और जनता को गुमराह करने का आरोप भी लगाया। उन्होंने कहा कि ओबीसी आरक्षण को लेकर कांग्रेस को अपने कार्यकाल और न्यायालय में अपनाए गए रुख पर जवाब देना चाहिए। सारंग ने कहा कि वर्तमान सरकार ओबीसी वर्ग के हितों और 27 प्रतिशत आरक्षण के प्रावधान को लेकर अपनी प्रतिबद्धता स्पष्ट कर चुकी है। उन्होंने राहुल गांधी की चिढ़ी को लेकर कांग्रेस पर राजनीतिक भ्रम पैदा करने का आरोप लगाया।

बाप्पा की विदाई, चौपाटी पर 'सेपटी फुल टाइट'

गिरगांव में आज उमड़ेगा आस्था का सैलाब, समुद्र से सड़क तक सुरक्षा का कड़ा इंतजाम

मुंबई, यशभारत। अनंत चतुर्दशी पर आज 25 सितंबर को गणपति बाप्पा की विदाई के लिए मुंबई तैयार है। लाखों श्रद्धालुओं की संभावित भीड़ को देखते हुए गिरगांव चौपाटी पर सुरक्षा व्यवस्था चाक-चौबंद कर दी गई है। शहर के प्रमुख विसर्जन स्थलों में शामिल चौपाटी पर समुद्र से लेकर जमीन तक सुरक्षा का घेरा रहेगा। पुलिस और सुरक्षा दलों के साथ समुद्र में सुरक्षा नौकाएं भी निगरानी करेंगी। विसर्जन के दौरान श्रद्धालुओं की भीड़ को व्यवस्थित रखने के लिए समुद्र तट और प्रमुख मार्गों पर बैरिकेडिंग की गई है। चौपाटी परिसर पर सीसीटीवी कैमरों के जरिए नजर रखी जाएगी। किसी भी आपात स्थिति से निपटने के लिए पुलिस चौकी और बचाव दलों को तैयार रखा गया है। समुद्र में उतरने वाले श्रद्धालुओं की गतिविधियों पर विशेष नजर रहेगी। गिरगांव चौपाटी पर लालबाग, गिरगांव, फोर्ट,



मझगांव, भायखला, दादर, माटुंगा, सायन और चेंबूर सहित कई इलाकों से गणेश प्रतिमाएं पहुंचेंगी। इससे चौपाटी और आसपास के क्षेत्रों में भारी भीड़ जुटने की संभावना है। प्रशासन ने भीड़ प्रबंधन के साथ यातायात व्यवस्था को लेकर भी तैयारियां की हैं। श्रद्धालुओं से निर्धारित मार्गों का इस्तेमाल करने और सुरक्षा निर्देशों का पालन करने की अपील की गई है। आस्था के महासंगम के बीच प्रशासन की प्रार्थमिकता विसर्जन को सुरक्षित और शांतिपूर्ण तरीके से संपन्न कराना है।

अनंत चतुर्दशी पर मुंबई में बरसेंगे बदरा

विदर्भ के चार जिलों में ऑरेंज अलर्ट

अनंत चतुर्दशी पर गणेश प्रतिमा विसर्जन के बीच मुंबई में हल्की से मध्यम बारिश होने की संभावना है। मौसम विभाग ने भारी बारिश की आशंका कम जताई है, जिससे विसर्जन के लिए निकलने वाले श्रद्धालुओं को राहत मिल सकती है। हालांकि, बदलते मौसम को देखते हुए सावधानी बरतने की सलाह दी गई है। गुरुवार को विदर्भ के नागपुर, यवतमाल, चंद्रपुर और गडचिरोली में ऑरेंज अलर्ट जारी किया गया है। इन जिलों में भारी से बहुत भारी बारिश के साथ गरज-चमक और तेज हवाएं चलने की संभावना है। सिंधुदुर्ग में यलो अलर्ट है। शुक्रवार को भंडारा, गोंदिया, चंद्रपुर और गडचिरोली में भारी बारिश की संभावना है। मुंबई, ठाणे, पालघर और रायगढ़ में हल्की बारिश हो सकती है।

पारसिक हिल से रेलवे ट्रैक पर गिरी कार

17 वर्षीय युवक गंभीर घायल, लोकल सेवा प्रभावित

नवी मुंबई, यशभारत। बेलापुर के पारसिक हिल इलाके में गुरुवार दोपहर उस समय अफरा-तफरी मच गई, जब एक कार पहाड़ी से नीचे सीधे रेलवे पटरी पर जा गिरी। हादसे में कार सवार 17 वर्षीय युवक गंभीर रूप से घायल हो गया। उसे तत्काल अस्पताल में भर्ती कराया गया। हादसा दोपहर करीब 3.15 से 3.30 बजे के बीच हुआ। पारसिक हिल पर रेलवे सुरंग के ऊपर से गुजर रही कार अचानक अनियंत्रित होकर ट्रैक पर जा गिरी। दुर्घटना के बाद युवक बेहोश हो गया। सूचना मिलते ही नवी मुंबई अग्निशमन दल और आपदा प्रबंधन की टीम मौके पर पहुंची और कार को पटरी से हटाने का काम शुरू किया। कार के रेलवे ट्रैक पर गिरने से पनवेल-उरण मार्ग की अप और डाउन दोनों लाइनों पर यातायात प्रभावित हुआ। लोकल सेवाएं बाधित होने से यात्रियों को परेशानी का सामना करना पड़ा। राहत एवं बचाव दल ने पहले घायल युवक को अस्पताल पहुंचाया और इसके बाद रेलवे पटरी से कार हटाने और कारवाई शुरू की। हादसा किस वजह से हुआ, इसकी जानकारी अभी सामने नहीं आई है। संबंधित एजेंसियां दुर्घटना के कारणों की जांच कर रही हैं।



मध्य रेलवे के 36 ठेकों से 58 करोड़ की कमाई

खानपान स्टॉल भी बने बड़े आय का जरिया

मुंबई, यशभारत। मध्य रेलवे ने विभिन्न व्यावसायिक गतिविधियों के लिए दिए गए 36 ठेकों से करीब 58 करोड़ रुपये का राजस्व अर्जित किया है। रेलवे स्टेशनों पर यात्रियों को खानपान सहित कई सुविधाएं उपलब्ध कराने के लिए दिए जाने वाले ठेकों से रेलवे की गैर-किराया आय में लगातार बढ़ोतरी हो रही है। मध्य रेलवे के स्टेशनों पर खाद्य पदार्थ और पेय पदार्थ बेचने वाले अधिकृत स्टॉल, खानपान केंद्र तथा अन्य व्यावसायिक सेवाएं रेलवे के लिए आय का महत्वपूर्ण स्रोत हैं। यात्रियों की बड़ी संख्या को देखते हुए इन सेवाओं की मांग भी बनी रहती है। रेलवे की ओर से विभिन्न व्यावसायिक गतिविधियों के लिए ठेके आवंटित किए जाते हैं। इसके बदले रेलवे को निर्धारित शुल्क और ठेका राशि के रूप में राजस्व प्राप्त होता है। इसी व्यवस्था के तहत 36 ठेकों से रेलवे को 58 करोड़ में की आय हुई है। मध्य रेलवे मुंबई सहित अपने प्रमुख स्टेशनों पर गैर-किराया राजस्व बढ़ाने के लिए व्यावसायिक गतिविधियों को बढ़ावा दे रहा है। खानपान सेवाओं के साथ अन्य सुविधाओं के विस्तार से रेलवे को अतिरिक्त आय मिल रही है, वहीं यात्रियों को स्टेशन परिसर में जरूरी सेवाएं भी उपलब्ध हो रही हैं।



हादसों के बाद मेट्रो-9 की सुरक्षा कड़ी

निर्माण स्थलों पर लापरवाही बर्दाश्त नहीं, एमएमआरडीए ने ठेकेदारों को दिए सख्त निर्देश

मुंबई, यशभारत। मेट्रो-9 के निर्माण कार्य के दौरान लगातार सामने आ रही दुर्घटनाओं के बाद मुंबई महानगर क्षेत्र विकास प्राधिकरण (एमएमआरडीए) ने सुरक्षा व्यवस्था को लेकर सख्त रुख अपनाया है। प्राधिकरण ने निर्माण स्थलों पर सुरक्षा मानकों का कड़ाई से पालन करने और लापरवाही मिलने पर तत्काल सुधारात्मक कार्रवाई करने के निर्देश दिए हैं। 20 सितंबर को काशीमोरा में निर्माणाधीन मेट्रो स्थल से सीमेंट का टुकड़ा गिरने से 23 वर्षीय युवक गंभीर रूप से घायल हो गया था। इससे पहले मेडेंटिया नगर में निर्माणाधीन मेट्रो स्टेशन से ग्रेनाइट के पथथ गिरने से सड़क से गुजर रही स्कूल बस के टायर क्षतिग्रस्त हो गए थे। नवंबर 2025 में मीरा रोड के साई बाबा नगर स्टेशन पर एक पर्यवेक्षक की गिरकर मौत हुई थी। गोल्डन नेस्ट क्षेत्र में भी निर्माणाधीन पुल से करीब 30 किलोग्राम वजन का लोहे का जैक सड़क पर गिर चुका है। इन घटनाओं के बाद एमएमआरडीए आयुक्त डॉ. संजय मुखर्जी ने अधिकारियों, ठेकेदारों और सुरक्षा सलाहकारों के साथ बैठक कर स्थिति की समीक्षा की। अतिरिक्त महानगर आयुक्त डॉ. अश्विनी जोशी ने मेट्रो-9 के विभिन्न निर्माण स्थलों का निरीक्षण किया। निरीक्षण में कुछ जगह कमजोर अवरोधक मिले, जिन्हें तत्काल मजबूत करने के निर्देश दिए गए। प्राधिकरण ने श्रमिकों और राहगीरों की सुरक्षा को सर्वोच्च प्राथमिकता देने को कहा है।



चर्नी रोड पुल की सीढ़ियों पर खुले फ्यूज बॉक्स

हादसे का खतरा, मनपा से तत्काल सुरक्षा इंतजाम की मांग

मुंबई, यशभारत। चर्नी रोड रेलवे स्टेशन के प्लेटफॉर्म नंबर-4 से जुड़ा है और प्रतिदिन हजारों यात्री इसका इस्तेमाल करते हैं। सीढ़ियों के बीच बिजली आपूर्ति से जुड़े दो बड़े फ्यूज बॉक्स लगे हैं, लेकिन उनके ऊपर सुरक्षा कवच या ढक्कन नहीं है। इन्हीं बॉक्स से पुल की रोशनी तथा नीचे स्थित सार्वजनिक शौचालय सहित अन्य स्थानों पर बिजली आपूर्ति की जाती है। पंड्या के अनुसार, मनपा के अधीन यह लोहे का फुटओवर ब्रिज चर्नी रोड स्टेशन के प्लेटफॉर्म नंबर-4 से जुड़ा है और प्रतिदिन हजारों यात्री इसका इस्तेमाल करते हैं। सीढ़ियों के बीच बिजली आपूर्ति से जुड़े दो बड़े फ्यूज बॉक्स लगे हैं, लेकिन उनके ऊपर सुरक्षा कवच या ढक्कन नहीं है। इन्हीं बॉक्स से पुल की रोशनी तथा नीचे स्थित सार्वजनिक शौचालय सहित अन्य स्थानों पर बिजली आपूर्ति की जाती है। पंड्या ने सवाल उठाया कि करीब एक वर्ष से खुले पड़े इन विद्युत उपकरणों की संबंधित विभागों ने जांच क्यों नहीं की। शॉर्ट सर्किट होने अथवा विद्युत प्रवाह लोहे के पुल में फैलने पर किसी बड़े हादसे की स्थिति में जिम्मेदारी किसकी होगी? उन्होंने कहा कि अनंत चतुर्दशी पर क्षेत्र में बड़ी संख्या में श्रद्धालुओं की आवाजाही होगी। इसलिए मनपा आयुक्त तत्काल संज्ञान लेकर फ्यूज बॉक्स पर सुरक्षा कवच लगावाएं और विद्युत व्यवस्था की जांच कराएं। साथ ही अग्निशमन विभाग और पुलिस से भी सुरक्षा मानकों की जांच की मांग की गई है।



सूखे पर सरकार को घेरेंगे शरद पवार

26 सितंबर को पंढरपुर में किसान आक्रोश मोर्चा

पंढरपुर, यशभारत। महाराष्ट्र के कई हिस्सों में कम बारिश से खरीफ फसलों को हुए नुकसान और सूखे जैसी स्थिति को लेकर राष्ट्रवादी कांग्रेस पार्टी (शरदचंद्र पवार) और महाविकास आघाड़ी ने सरकार के खिलाफ मोर्चा खोल दिया है। 26 सितंबर को पंढरपुर तहसील कार्यालय पर किसान आक्रोश मोर्चा निकाला जाएगा। इसका नेतृत्व राष्ट्रवादी कांग्रेस पार्टी (शरदचंद्र पवार) के अध्यक्ष शरद पवार करेंगे। मोर्चे की घोषणा विधायक अभिजीत पाटील और सांसद धैर्यशील मोहिते पाटील ने बैठक के बाद की। आंदोलन के जरिए सरकार से सोलापुर सहित प्रभावित क्षेत्रों में तत्काल सूखा घोषित करने की मांग की जाएगी। साथ ही सूखा प्रभावित किसानों को 50 हजार रुपये प्रति हेक्टेयर मुआवजा, भूमिहीन कृषि मजदूर परिवारों को 25 हजार रुपये की सहायता और किसानों की कर्जमाफी की मांग रखी जाएगी। आगामी फसल मौसम के लिए किसानों को नए फसल ऋण उपलब्ध कराने पर भी जोर दिया जाएगा। इसके अलावा पशुओं के लिए चारा शिविर शुरू करने और ग्रामीण क्षेत्रों में पेयजल के लिए टैंकों की संख्या बढ़ाने की मांग की गई है। शरद पवार ने मुख्यमंत्री देवेंद्र फडणवीस को पत्र लिखकर भी सूखा घोषित करने की मांग की है। 28 सितंबर से पवार विभिन्न सूबाग्रस्त जिलों का दौरा कर किसानों से संवाद करेंगे।



एक्सप्रेसवे-रेल की रफ्तार से घटा सफर का समय

देश के कई शहरों के बीच तेज हुई रफ्तार

मुंबई, यशभारत। देश में बुनियादी ढांचे के तेजी से विस्तार ने लंबी दूरी की यात्रा को आसान और तेज बनाया है। एक्सप्रेसवे, सुरंग, पुल और आधुनिक रेल परियोजनाओं के निर्माण से कई प्रमुख शहरों के बीच सफर का समय उल्लेखनीय रूप से कम हुआ है। दिल्ली-मुंबई एक्सप्रेसवे के पूरा होने पर दोनों महानगरों के बीच सड़क यात्रा का समय करीब 33 घंटे से घटकर लगभग 12 घंटे रह जाने की उम्मीद है। मुंबई-नागपुर समृद्ध महामार्ग ने दोनों शहरों के बीच यात्रा का समय करीब 16 घंटे से घटकर लगभग आठ घंटे कर दिया है। दिल्ली-मेरठ एक्सप्रेसवे से दिल्ली से मेरठ का सफर बाढ़ घंटे से घटकर करीब 50 मिनट रह गया है। दिल्ली-देहरादून आर्थिक गलियारे से दोनों शहरों के बीच यात्रा लगभग छह घंटे से घटकर बाढ़ घंटे हुई है। दिल्ली-अमृतसर-कटरा एक्सप्रेसवे से दिल्ली से कटरा की दूरी भी करीब छह घंटे में तय की जा रही है। जम्मू-कश्मीर में उधमपुर-श्रीनगर-बारामूला रेल संपर्क परियोजना के कारण कटरा से श्रीनगर की यात्रा लगभग तीन घंटे में संभव हुई है। अटल सुरंग सहित कई महत्वपूर्ण परियोजनाओं ने दुर्गम क्षेत्रों को भी बेहतर संपर्क दिया है। सरकार का दावा है कि इन परियोजनाओं से यात्रा के साथ-साथ व्यापार और पर्यटन को भी गति मिल रही है।



मां-बाप का झगड़ा छुड़ाना पड़ा भारी

पिता ने बेटे को चाकू से गोदा, आरोपी गिरफ्तार

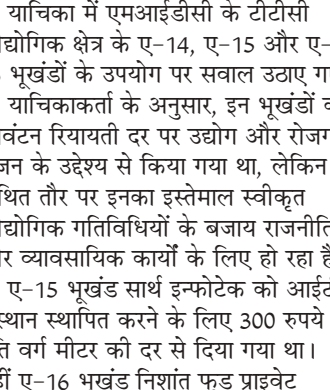
रायगढ़, यशभारत। महाराष्ट्र के रायगढ़ जिले में घरेलू विवाद के दौरान माता-पिता के झगड़े में बीच-बचाव करना 23 वर्षीय युवक को भारी पड़ गया। आरोप है कि पिता ने गुस्से में अपने ही बेटे पर रसोई के चाकू से हमला कर उसकी हत्या कर दी। घटना पोलादपुर के पास लोहारे देउलकांड गांव की है। पुलिस ने आरोपी पिता सचिन चिकने (46) को गिरफ्तार कर लिया है। पुलिस के अनुसार, सचिन अपनी पत्नी संध्या (40) के साथ घरेलू सामान खरीदने पोलादपुर गया था। पत्नी दुध लेने गई तो सचिन वहां से बिना बताए घर लौट आया। पत्नी के बाद में घर पहुंचने पर दोनों के बीच विवाद शुरू हो गया। आरोप है कि सचिन ने पत्नी और घर में मौजूद बच्चों के साथ गाली-गलौज शुरू कर दी। इसी दौरान उनका बेटा साई झगड़ा शांत कराने के लिए पिता के पीछे रसोई में पहुंचा। पुलिस के मुताबिक, सचिन ने रसोई का चाकू उठाकर साई के सीने पर वार किया। उसके हाथ और कलाई पर भी चोटें आईं। परिजन उसे अस्पताल ले गए, लेकिन डॉक्टरों ने मृत घोषित कर दिया। घटना के बाद आरोपी फरार हो गया था। पुलिस ने मोबाइल टावर की मदद से उसका पता लगाया और महाड में मुंबई-गोवा राजमार्ग के सर्विस रोड से गिरफ्तार किया। अदालत ने उसे 28 सितंबर तक पुलिस हिरासत में भेज दिया है।



एमआईडीसी भूखंडों के इस्तेमाल पर हाई कोर्ट सख्त

नाईक पिता-पुत्र समेत सरकार और एमआईडीसी अधिकारियों को नोटिस, 8 अक्टूबर को अगली सुनवाई

नवी मुंबई, यशभारत। खैरणे स्थित एमआईडीसी के औद्योगिक भूखंडों के कथित गैर-औद्योगिक और राजनीतिक इस्तेमाल को लेकर बॉम्बे हाईकोर्ट ने महाराष्ट्र के वन मंत्री गणेश नाईक और उनके पुत्र, पूर्व विधायक संदीप नाईक समेत राज्य सरकार और एमआईडीसी अधिकारियों को नोटिस जारी किया है। यह मामला वाशी के सामाजिक कार्यकर्ता बालासाहेब मिर्जे की जनहित याचिका से जुड़ा है। याचिका में एमआईडीसी के टीटीसी औद्योगिक क्षेत्र के ए-14, ए-15 और ए-16 भूखंडों के उपयोग पर सवाल उठाए गए हैं। याचिकाकर्ता के अनुसार, इन भूखंडों का आवंटन रियायती दर पर उद्योग और रोजगार सृजन के उद्देश्य से किया गया था, लेकिन कथित तौर पर इनका इस्तेमाल स्वीकृत औद्योगिक गतिविधियों के बजाय राजनीतिक और व्यावसायिक कार्यों के लिए हो रहा है। ए-15 भूखंड सार्थ इन्फोटेक को आईटी संस्थान स्थापित करने के लिए 300 रुपये प्रति वर्ग मीटर की दर से दिया गया था। वहीं ए-16 भूखंड निशांत फूड प्राइवेट लिमिटेड को ब्रेड-बिस्किट निर्माण के लिए 200 रुपये प्रति वर्ग मीटर की दर से आवंटित किया गया था। याचिका में आरोप है कि दोनों भूखंडों का उपयोग निर्धारित उद्देश्य के अनुरूप नहीं हो रहा है। मुख्य न्यायाधीश महेश चंद्र त्रिपाठी और न्यायमूर्ति अद्वैत एम. सेठना की पीठ ने 17 सितंबर को नोटिस जारी करते हुए प्रतिवादियों को जवाब दाखिल करने के लिए दो सप्ताह का समय दिया है। मामले की अगली सुनवाई 8 अक्टूबर को होगी। हाईकोर्ट ने अभी आरोपों के गुण-दोष पर कोई फैसला नहीं दिया है।



अनशन से पहले ही मुंबई से बाहर पहुंचे साहिल के माता-पिता

परिजनों ने पुलिस पर जबरन ले जाने का लगाया आरोप, पुलिस ने किया इनकार

मुंबई, यशभारत। आईआईटी-बॉम्बे के छात्र साहिल वाकोडे की आत्महत्या के मामले में नया विवाद खड़ा हो गया है। साहिल के परिजनों ने आरोप लगाया है कि पुलिसकर्मियों ने उन्हें मुंबई से बाहर जाने के लिए मजबूर किया। हालांकि, पुलिस ने इन आरोपों से इनकार करते हुए कहा है कि परिवार को जबरन नहीं ले जाया गया। परिवार के वकील निखिल कांवले के अनुसार, साहिल के माता-पिता बुधवार तड़के वाशिम पहुंच गए। उनका आरोप है कि मंगलवार शाम मीडिया से बातचीत के बाद सादे कपड़ों में कुछ पुलिसकर्मी उनके पास पहुंचे और उन्हें दूसरी कार में बैठने को कहा। परिवार को बताया गया कि उन्हें घर पहुंचाया जा रहा है। इसके बाद उन्हें मुंबई से बाहर ले जाया गया। परिवार ने साहिल की मौत के मामले में न्याय की मांग को लेकर मुंबई में अनशन करने की घोषणा की थी। इसी बीच उनके शहर से बाहर पहुंचने को लेकर सवाल उठे हैं। साहिल की मौत के मामले की जांच मुंबई अपराध शाखा कर रही है। पुलिस ने मामले में प्रोफेसर सूर्यनारायण डुला के खिलाफ आत्महत्या के लिए उकसाने और अनुसूचित जाति-जनजाति अत्याचार निवारण कानून के तहत मामला दर्ज किया है। आईआईटी-बॉम्बे ने भी घटना की जांच के लिए दस सदस्यीय समिति गठित की है।



मराठवाड़ा में सूखे की मार, पानी पर सियासत गरम

फडणवीस का एमटीए पर निशाना, बोले- पिछली सरकार ने बंद की जल ग्रिड योजना

मुंबई, यशभारत। बारिश की कमी से झुझ रहे मराठवाड़ा के लातूर और धाराशिव जिलों का दौरा कर मुख्यमंत्री देवेंद्र फडणवीस ने फसलों और जलस्रोतों की स्थिति का जायजा लिया। उन्होंने किसानों को आर्थिक सहायता, पेयजल और चारे की व्यवस्था का भरोसा दिया। फडणवीस के अनुसार, दोनों जिलों में सामान्य से करीब 50 प्रतिशत कम बारिश हुई है। इससे सोयाबीन समेत खरीफ फसलों को नुकसान हुआ है और कुएं सूखने लगे हैं। मुख्यमंत्री ने आरोप लगाया कि पिछली सरकार ने मराठवाड़ा के लिए प्रस्तावित महत्वाकांक्षी जल ग्रिड परियोजना को आगे नहीं बढ़ाया। उनका कहना है कि जल जीवन मिशन के तहत केंद्र से मिले धन का इस्तेमाल जल ग्रिड के लिए किया जा सकता था, लेकिन उसे दूसरी योजनाओं में लगाया गया। फडणवीस ने बताया कि सातारा, सांगली और कोल्हापुर का अतिरिक्त बाढ़ का पानी उजनी बांध के जरिए मराठवाड़ा पहुंचाने वाली परियोजना को विश्व बैंक की मंजूरी मिल गई है। मराठवाड़ा को सूखा मुक्त बनाने वाली एक अन्य योजना की विस्तृत परियोजना रिपोर्ट दिर्सम तक आने की उम्मीद है। सरकार ने अगले जून तक पेयजल उपलब्धता सुनिश्चित करने के साथ रबी फसल, चारे और आर्थिक सहायता की व्यवस्था का भरोसा दिया है।



किसानों का दर्द भारी दांडिया उत्सव पर विराम

डोंबिवली, यश भारत। महाराष्ट्र के कई हिस्सों में अनियमित बारिश से फसलों को हुए नुकसान और किसानों के सामने खड़े आर्थिक संकट को देखते हुए कल्याण लोकसभा क्षेत्र के सांसद डॉ. श्रीकांत शिंदे ने इस वर्ष डोंबिवली में होने वाला भव्य 'रासरंग दांडिया उत्सव-2026' रद्द करने का निर्णय लिया है। उत्सव पर खर्च होने वाली राशि अब संकटग्रस्त किसान परिवारों की सहायता में इस्तेमाल की जाएगी। शिवसेना विधायक राजेश मोरे ने गुरुवार को पत्रकार परिषद में इसकी जानकारी दी। डोंबिवली के नवदुर्गा मित्र मंडल और डॉ. श्रीकांत शिंदे फाउंडेशन की ओर से हर वर्ष डीएनसी स्कूल मैदान में रासरंग दांडिया आयोजित किया जाता है। इसमें कल्याण-डोंबिवली, ठाणे, उल्हासनगर और अंबरनाथ सहित आसपास के क्षेत्रों से हजारों लोग शामिल होते हैं। इस बार आयोजन पर होने वाला खर्च किसानों की सहायता के लिए दिया जाएगा। नुकसान के आकलन के बाद सहायता का क्षेत्र और स्वरूप तय किया जाएगा। हालांकि दांडिया उत्सव नहीं होगा, लेकिन नवरात्र की धार्मिक परंपरा जारी रहेगी। घटस्थापना, पूजा और देवी आराधना सामान्य रूप से की जाएगी।



विघ्न हरो विनायक!

गणेश चतुर्थी से शुरू हुआ आस्था व उत्साह का पर्व आज अनंत चतुर्दशी पर गणपति बाप्पा की विदाई के साथ अपने भावपूर्ण पड़ाव पर पहुंच रहा है। दस दिनों तक घर-घर और सार्वजनिक मंडपों में विराजमान रहने वाले विघ्नहर्ता गणेश अब जल में विसर्जित होंगे। ढोल-ताशों की गूंज, ‘गणपति बाप्पा मोरया’ के जयघोष और श्रद्धालुओं की नम आंखों के बीच होने वाली यह विदाई भारतीय दर्शन की एक गहरी अनुभूति है। गणपति का आगमन सगुण रूप में होता है। मिट्टी की प्रतिमा में हम ईश्वर का साकार स्वरूप देखते हैं। उसे सजाते हैं, पूजते हैं, आरती करते हैं, भोग लगाते हैं और अपनी इच्छाएं, चिंताएं तथा मन की पीड़ा उनके चरणों में रख देते हैं। कुछ दिनों के लिए वह हमारे घर और समाज के केंद्र में आ जाते हैं। लेकिन अनंत चतुर्दशी हमें यह भी सिखाती है कि साकार रूप अंततः निर्गुण में विलीन होता है। मिट्टी से बनी प्रतिमा मिट्टी में लौट जाती है, लेकिन उसके माध्यम से जागी आध्यात्मिक चेतना हमारे भीतर बनी रहती है। यही इस पर्व का सबसे बड़ा संदेश है कि रूप अवश्य बदलता है, आस्था नहीं। जीवन में सुख-दुःख, सफलता-असफलता, मिलना-बिछड़ना और निर्माण-विनाश का क्रम चलता रहता है। गणपति की विदाई हमें परिवर्तन को स्वीकार करने और नए आगमन की आशा रखने का साहस देती है। गणेशोत्सव का एक और महत्वपूर्ण संदेश है संगठन और एकता। सार्वजनिक गणेशोत्सव ने समाज के अलग-अलग वर्गों को एक मंच पर आने का अवसर दिया। जाति, भाषा, क्षेत्र और आर्थिक स्थिति के भेद भूलकर लोग एक साथ आरती करते हैं, सेवा करते हैं और उत्सव मनाते हैं। कोई सजावट की जिम्मेदारी उठाता है, कोई व्यवस्था संभालता है, कोई प्रसाद बांटता है और कोई सामाजिक सेवा में योगदान देता है। यही सामूहिकता समाज को मजबूत बनाती है। आज मनुष्य अनेक प्रकार के विघ्नों से घिरा हुआ है। महंगाई, बेरोजगारी, प्रदूषण, यातायात, बढ़ता तनाव, सामाजिक मतभेद, पारिवारिक चुनौतियां और बदलती तकनीक के बीच पैदा हो रही नई समस्याएं उसके सामने हैं। ऐसे समय में गणपति से केवल धन, सफलता और व्यक्तिगत सुख की कामना करना पर्याप्त नहीं। हमें प्रार्थना करनी चाहिए कि हे विघ्नहर्ता, हमारे जीवन के विघ्न दूर करो, हमारे निर्णयों में विवेक दो, कठिन परिस्थितियों से लड़ने का साहस दो और हमें सही मार्ग पर चलने की शक्ति प्रदान करो। हमारे भीतर के अहंकार, स्वार्थ, क्रोध और द्वेष भी बड़े विघ्न हैं। यदि गणपति की आराधना के बाद भी ये हमारे भीतर बने रहें तो पूजा अभूरी है। सच्ची भक्ति वह है जो मनुष्य को बेहतर इंसान बनाए, उसे दूसरों के दुःख को समझने और समाज के लिए कुछ करने की प्रेरणा दे। आज जब समाज को जोड़ने वाली शक्तियां की आवश्यकता पहले से अधिक है, तब गणेशोत्सव हमें याद दिलाता है कि संगठन केवल भीड़ का नाम नहीं, अपितु एक उद्देश्य के लिए साथ खड़े होने की शक्ति है। जब व्यक्ति अपने छोटे-छोटे स्वार्थों से ऊपर उठकर समाज और राष्ट्र के हित के बारे में सोचता है, तभी एक मजबूत राष्ट्र की निर्माण होता है। आइए, अनंत चतुर्दशी पर गणपति बाप्पा को विदा करते हुए केवल अपने घर की खुशियों की प्रार्थना न करें। प्रार्थना करें कि हमारे समाज से भय, द्वेष, हिंसा और अविश्वास के विघ्न दूर हों। हर युवा को अवसर मिले, हर परिवार में सुख-शांति हो, किसान और श्रमिक सम्मान के साथ जीवन जी सकें, शिक्षा और स्वास्थ्य सबकी पहुंच में हों और देश की प्रगति का लाभ समाज के अंतिम व्यक्ति तक पहुंचे। हे गणपति बाप्पा, भारत को ज्ञान, विज्ञान, उद्योग, कृषि, शिक्षा, संस्कृति और तकनीक के प्रत्येक क्षेत्र में नई ऊंचाइयों तक पहुंचाने की शक्ति प्रदान करो। हमारा राष्ट्र मजबूत, आत्मनिर्भर, सुरक्षित, शांतिपूर्ण और समृद्ध बने। दुनिया में भारत की पहचान केवल आर्थिक शक्ति के रूप के साथ-साथ मानवीय मूल्यों, संस्कारों, ज्ञान और सद्भाव के देश के रूप में और मजबूत हो। गणपति बाप्पा की यह विदाई हमें सगुण से निर्गुण, व्यक्तिगत आस्था से सामाजिक चेतना और संगठन से राष्ट्रशक्ति की ओर ले जाए।

गणपति बाप्पा मोरया! अगले बरस तू जल्दी आ...!

कड़वे वचन
आदमी जब अपनीलड़कीके लिए लड़का देखने जाता है तो पत्नी पते से कहती किदो बातों का ध्यान रखनाएक लड़का खाते पीते घर का हो।दो ममार खाता पीता नहीं हो।दोनों बातों में बड़ा विरोधाभास है पर समझने वाला इसका मतलब समझता है।फिर पता नहीं क्यों लोग जिंदगी का मतलब नहीं समझते।अरे भाइ जीना है तो जीना (सीढ़ियां) तो चढ़ना ही पड़ेगा।

आज का राशिफल	
पंचांग:- 25 सितंबर 2026 दिन- शुक्रवार, माह- भाद्र शुक्ल पक्ष विक्रम संवत् 2083	ज्योतिषाचार्य पीडित लोकेश व्यास
मेघ दिन खुशनुमा रहने वाला है किसी पुराने मित्र से मुलाकात हो सकती है	वृष पारिवारिक समस्याओं का सामना करना पड़ सकता है धैर्य के साथ आगे बढ़े
मिथुन आज का दिन व्यापार के लिए कोई नई योजना बनाने के लिए है सफलता मिलेगी	कर्क आज का दिन रचनात्मक कार्य करने में व्यतीत होने वाला है अपनी सुख सुविधाओं के सामान पर खर्च कर सकते हैं
सिंह दिन बुद्धि व विवेक के निर्णय लेने के लिए रहने वाला है आत्मविश्वास में वृद्धि होगी	कन्या विद्यार्थी वर्ग को अधिक मेहनत करनी पड़ सकती है मेहनत तनाव को कम करने की कोशिश करें
तुला निवेश करने से पहले अच्छी तरह सोच समझ ले बड़ों की सलाह को मानकर कार्य करें	वृश्चिक अजलबखियों से सावधानी बरते किसी की भी बहकावे में ना आए
धनु दिल लाभदायक रहने वाला है मान सम्मान में वृद्धि होगी	मकर अटका हुआ कार्य पूरे होने के संकेत दिखा रहे हैं मेहनत करें सफलता मिलेगी
कुंभ दिन भर आलस महसूस कर करेगे कार्य पूरे होने में रुकावट आ सकती है	मीन पारिवारिक माहौल खुशनुमा रहेगा दिन अच्छ व्यतीत करेगे

मंच पर वजन उठाते हुए मीराबाई चानू के सामने केवल लोहे की छड़ नहीं थी। उस पर वर्षों की मेहनत, चोटों से लौटने का संघर्ष और एक ऐसा सपना रखा था, जो उनके शानदार करियर के बावजूद अधूरा था। बुधवार को एशियाई खेलों में महिलाओं की 49 किलोग्राम भारवर्ग की स्पर्धा में जब उन्होंने कुल 198 किलोग्राम वजन उठाकर रजत पदक जीता, तो उनके खाने में एक और पदक जुड़ा। लेकिन इस पदक का अर्थ पदक तालिका की एक पंक्ति से कहीं बड़ा है।

मीराबाई ने श्रैच में 87 किलोग्राम और क्लीन एंड जर्क में 111 किलोग्राम वजन उठाया। यह आंकड़ा उनकी उपलब्धि का सबसे सीधा परिचय है। मगर खेल की असली कहानी अक्सर आंकड़ों के बाहर लिखी जाती है। वह उन घंटों में लिखी जाती है, जब खिलाड़ी अकेले अभ्यास करता है; उन दिनों में जब चोट के कारण मैदान से बाहर रहना पड़ता है; और उन रातों में जब पिछली असफलता अगले प्रयास पर भारी पड़ती है। मीराबाई के लिए एशियाई खेलों का पदक ऐसा ही एक अधूरा अध्याय था। 2014 के एशियाई खेलों में वह नौवें स्थान पर रही थीं। 2018 में चोट ने उन्हें प्रतियोगिता से दूर कर दिया। 2023 के हांगझोउ एशियाई खेलों में वह चौथे स्थान पर रहीं। वहां जांच की चोट ने उनके क्लीन एंड जर्क को भी प्रभावित किया। एक खिलाड़ी के लिए चौथा स्थान कभी-कभी सबसे कठिन स्थान होता है—पदक सामने दिखाई देता है, लेकिन हाथ नहीं आता।इस बार वह दूरी खत्म हुई। पदक जीतने के बाद मीराबाई ने कहा कि आखिरकार उन्होंने वह पदक जीत लिया, जिसका उन्हें कई वर्षों से इंतजार था। उन्होंने बताया कि जब से उन्होंने भारोत्तोलन शुरू किया था, तब से एशियाई खेलों का पदक उनका सपना था। आज सपना पूरा हुआ और उन्हें खुद पर गर्व है।

इन शब्दों को सुनते हुए शायद यह समझना जरूरी है कि बड़े खिलाड़ी के लिए भी हर उपलब्धि एक जैसी नहीं होती। ओलंपिक रजत पदक उनके पास है। विश्व चैंपियनशिप का स्वर्ण उनके नाम है। राष्ट्रमंडल खेलों में उन्होंने कई स्वर्ण जीते हैं। फिर भी एशियाई खेलों का पदक उनके लिए जरूरी था। क्योंकि खेल में उपलब्धियों की सूची जितनी लंबी होती जाती है, अपूर्व हिस्से उतने ही स्पष्ट दिखाई देते हैं।

यही खेल का विरोधाभास है। बाहर से देखने वाले के लिए खिलाड़ी पदकों का नाम बन जाता है। खिलाड़ी

72वें राष्ट्रीय फिल्म पुरस्कारों मे दिखी भारतीय सिनेमा की बहुभाषी और बहुरंगी तस्वीर

भारतीय सिनेमा केवल मनोरंजन का माध्यम नहीं है,बल्कि यह भारत की बहुभाषी, बहुसांस्कृतिक और बहुरंगी सामाजिक चेतना का जीवंत दस्तावेज भी है। देश के अलग-अलग हिस्सों में बोली जाने वाली भाषाएँ, लोक परंपराएँ, सामाजिक संघर्ष,बदलते जीवन-मूल्य,आकांक्षाएँ और सपने जब



किसी एक प्रदेश की कहानी नहीं रह जाते. बल्कि पूरे भारत की सामूहिक अनुभूति का हिस्सा बन जाते हैं। 72वें राष्ट्रीय फिल्म पुरस्कारों का आयोजन इसी व्यापक भारतीय सिनेमाई चेतना को सामने लाने वाला अवसर बना। गुजरात के एकता नगर में राष्ट्रपति द्रौपदी मुर्मु द्वारा पुरस्कार प्रदान किया जाना अपने आप में इस समारोह को एक अलग राष्ट्रीय अर्थ देता है।राष्ट्रीय फिल्म पुरस्कारों का महत्व केवल पुरस्कार पाने वाले कलाकारों और फिल्मों तक सीमित नहीं है। यह भारतीय सिनेमा की उस रचनात्मक यात्रा का सम्मान है, जिसमें देश की अलग-अलग भाषाओं और क्षेत्रों के फिल्मकार अपने-अपने समाज की कहानियों को राष्ट्रीय मंच तक लेकर आते हैं। इस बार भी लगभग 400 फीचर फिल्मों ने 34 भाषाओं में और 161 गैर-फीचर फिल्मों ने 24 भाषाओं में पुरस्कारों के लिए अपनी दावेदारी प्रस्तुत की। इनमें से 22 फीचर फिल्मों और 23 गैर- फीचर फिल्मों को राष्ट्रीय पुरस्कार प्रदान किए गए। यह संख्या बताती है कि भारतीय सिनेमा का विस्तार किसी एक भाषा, प्रदेश या शैली तक सीमित नहीं है।इस समारोह का सबसे भावपूर्ण क्षण दादा साहेब फाल्के पुरस्कार से अभिनेता अनंत नाग को सम्मानित किया जाना रहा। वर्ष 2024 के दादा साहेब फाल्के पुरस्कार से सम्मानित अनंत नाग ने अपने लंबे अभिनय जीवन की स्मृतियों को साझा करते हुए उस संघर्षपूर्ण यात्रा को याद किया, जिसने उन्हें रंगमंच से भारतीय सिनेमा तक पहुंचाया।आश्रम में बचपन बिताने से लेकर मुंबई पहुंचने और रंगमंच से जुड़ने तक का उनका सफर इस बात का प्रमाण है कि कला की दुनिया में बड़ी पहचान के पीछे वर्षों की साधना, संघर्ष और निरंतर सीखने की प्रक्रिया होती है। फिल्मों में आने से पहले लगभग 50 नाटकों में अभिनय का अनुभव उनके अभिनय जीवन की मजबूत बुनियाद बना। श्याम बेनेगल जैसे महत्वपूर्ण फिल्मकार के साथ काम करने के बाद उन्होंने कन्नड़ सिनेमा और बेंगलुरु को अपनी कर्मभूमि बनाया। पिछले वर्ष राष्ट्रपति द्वारा उन्हें पद्म भूषण से सम्मानित किया जाना भी उनके दीर्घकालिक योगदान की राष्ट्रीय स्वीकृति का प्रमाण है।अनंत नाग की यात्रा भारतीय सिनेमा के उस स्वरूप को सामने लाती है,जिसमें कलाकार केवल पदें पर दिखाई देने वाला चेहरा नहीं होता, बल्कि वह अपने समय, समाज और संस्कृति का संवाहक भी होता है। एक कलाकार का जीवन कई पीढ़ियों को प्रभावित करता है। इसलिए राष्ट्रपति द्रौपदी मुर्मु का यह आग्रह विशेष महत्व रखता है कि फिल्म जगत से जुड़े लोग स्वस्थ जीवनशैली को बढ़ावा दें और ऐसे पदार्थों के प्रचार से बचें जो समाज और विशेषकर युवाओं के लिए हानिकारक हो सकते हैं। कलाकारों की लोकप्रियता उन्हें सामाजिक जिम्मेदारी भी प्रदान करती है। युवा पीढ़ी अपने पसंदीदा कलाकारों के व्यवहार और संदेश से प्रभावित होती है। ऐसे में सिनेमा की सामाजिक भूमिका पदों से बाहर भी दिखाई देती है।राष्ट्रपति ने भारतीय सिनेमा को भारत की विविध भाषाओं, परंपराओं, आकांक्षाओं और संघर्षों का प्रतिबिंब बताते हुए रचनात्मक क्षेत्र में काम करने वाले छोटे कलाकारों, सहायकों और संघर्षरत कर्मियों की गरिमा तथा सामाजिक सुरक्षा की आवश्यकता पर भी बल दिया। यह पहलु अत्यंत महत्वपूर्ण है, क्योंकि किसी फिल्म की सफलता के पीछे केवल अभिनेता, निर्देशक या निर्माता नहीं होते। पदों के पीछे काम करने वाले असंख्य तकनीशियन, सहायक कलाकार, लेखक, संपादक, कैमरामैन,मेकअप कलाकार और अन्य कर्मियों का योगदान भी उतना ही महत्वपूर्ण होता है। रचनात्मक अर्थव्यवस्था को मजबूत बनाने के लिए इस पूरे तंत्र को सम्मान और सुरक्षा देना आवश्यक है। महिलाओं की सभी निर्णायक मंडलियों में भागीदारी बढ़ाने का संदेश भी सिनेमा के बदलते स्वरूप और अधिक समावेशी रचनात्मक व्यवस्था की दिशा में महत्वपूर्ण संकेत है। एकता नगर में आयोजित यह समारोह अपने स्थान के कारण भी विशेष रहा। गुजरात के राज्यपाल आचार्य देवव्रत ने दिल्ली से बाहर राष्ट्रीय फिल्म पुरस्कार समारोह आयोजित करने की परंपरा को महत्वपूर्ण बताते हुए इसे सरदार वल्लभभाई पटेल की राष्ट्रीय एकता की भावना से जोड़ा। एकता नगर स्वयं उस राष्ट्रीय एकता की स्मृति से जुड़ा स्थान है, जहाँ लौह पुरुष सरदार पटेल की विराट प्रतिमा देश की एकजुटता का संदेश देती है। ऐसे स्थान पर भारतीय सिनेमा का राष्ट्रीय सम्मान समारोह आयोजित होना इस तथ्य को रेखांकित करता है कि संस्कृति और सिनेमा भी देश को जोड़ने वाली शक्तियाँ हैं।इस मौके पर गुजरात के मुख्यमंत्री भूपेंद्र पटेल ने सिनेमा को समाज का प्रतिबिंब और संस्कृति का वाहक बताते हुए कहा कि यह मानवीय भावनाओं को व्यक्त करने के साथ भारत की वैश्विक पहचान और सॉफ्ट पावर को मजबूत करने का प्रभावी माध्यम है। आज भारतीय फिल्में केवल देश के दर्शकों तक सीमित नहीं हैं। भारतीय कथानक, संगीत, अभिनय और सांस्कृतिक संवेदनाएँ दुनिया के अलग-अलग हिस्सों में दर्शकों तक पहुंच रही हैं। यही कारण है कि सिनेमा अब मनोरंजन उद्योग के साथ-साथ सांस्कृतिक कूटनीति और वैश्विक पहचान का महत्वपूर्ण माध्यम भी बन चुका है।इस वर्ष के पुरस्कारों में भारतीय सिनेमा की विविधता स्पष्ट रूप से दिखाई दी। सर्वश्रेष्ठ अभिनेता का पुरस्कार मम्मूटी को ‘ब्रामयुगम’ और कार्तिक आर्यन को ‘चंद्र चैपियन’ के लिए संयुक्त रूप से दिया गया। सर्वश्रेष्ठ अभिनेत्री का पुरस्कार ‘आर्टिकल 370’ के लिए यामी गौतम को मिला। संजय मिश्रा को ‘भक्षक’ के लिए सर्वश्रेष्ठ सहायक अभिनेता तथा सचाना नामीदास को ‘महाराजा’ और रोमाश्री वकांडी को ‘मिथ्या’ के लिए सर्वश्रेष्ठ सहायक अभिनेत्री का सम्मान मिला। ‘आर्टिकल 370’ को सर्वश्रेष्ठ फीचर फिल्म का पुरस्कार मिला, जबकि रणवीर हुड्डा को ‘स्वातंत्र्य वीर समाकर’ के लिए निर्देशन की शुरुआत के लिए विशेष पहचान मिली। ‘कल्कि 2898 एडी’ को संपूर्ण मनोरंजन प्रदान करने वाली सर्वश्रेष्ठ लोकप्रिय फिल्म और ‘केप्टन मिस्टर’ को राष्ट्रीय, सामाजिक तथा पर्यावरणीय मूल्यों को बढ़ावा देने वाली सर्वश्रेष्ठ फीचर फिल्म के रूप में सम्मानित किया गया।

(लेखक-विनोद सिंह तकियावाला)

विचार प्रवाह

रजत में चमका मीराबाई का सपना



के भीतर मार हर पदक के पीछे एक अलग कहानी होती है।मीराबाई की कहानी में सफलता जितनी महत्वपूर्ण है, वापसी भी उतनी ही महत्वपूर्ण है। चोट से लौटना केवल शरीर को ठीक करना नहीं है। यह अपने ऊपर भरोसा फिर से खड़ा करना है। जब कोई खिलाड़ी एक बार असफल होता है तो अगली प्रतियोगिता में केवल प्रतिद्वंद्वी से मुकाबला नहीं करता, अपने पिछले परिणाम की स्मृति से भी लड़ता है। मीराबाई ने इस स्मृति को अपने ऊपर हावी नहीं होने दिया। उनका रजत भारत के लिए इसलिए भी महत्वपूर्ण है कि भारोत्तोलन में एशियाई खेलों का पिछला पदक 1998 के बैंकॉक खेलों में कर्णम मल्लेश्वरी ने जीता था। करीब तीन दशक के इस अंतराल के बाद भारतीय भारोत्तोलन को फिर एशियाई खेलों के मंच पर पदक मिला है। मीराबाई के रजत ने उस लंबे इंतजार को भी समाप्त किया। लेकिन यहां से एक दूसरा सवाल उठता है। क्या किसी एक खिलाड़ी की असाधारण क्षमता और इच्छाशक्ति को ही हमारी खेल व्यवस्था की सफलता मान लिया जाए?

पदक जीतने के बाद जश्न स्वाभाविक है। खिलाड़ी का सम्मान भी होना चाहिए। लेकिन पदक की चमक के पीछे जो व्यवस्था है, उस पर बात करना भी उतना ही जरूरी है। प्रशिक्षण की गुणवत्ता, खेल विज्ञान, पोषण, चोट से बचाव, पुनर्वास, प्रशिक्षकों की उपलब्धता और प्रतिभा की पहचान—ये वे चीजें हैं जो किसी खिलाड़ी की सफलता के पीछे चुपचाप काम करती हैं।

हम अक्सर अंतिम क्षण देखते हैं। खिलाड़ी ने कितना

वजन उठाया, किसे हराया, कौन-सा पदक जीता—इनका हिसाब आसानी से लगाया जा सकता है। मगर यह हिसाब कौन रखता है कि उस पदक तक पहुंचने में कितनी बार खिलाड़ी को अपने शरीर की सीमा से आगे जाना पड़ा? कितनी बार उसे चोट से उबरना पड़ा? कितनी बार उसे अपने परिवार, अपने आर्थिक संसाधनों और भविष्य को लेकर अनिश्चितताओं के बीच अभ्यास करना पड़ा?

मीराबाई की सफलता इन सवालों को सामने लाती है।भारत में खेल का दायरा पिछले वर्षों में निश्चित रूप से बढ़ा है। गैर-क्रिकेट खेलों के खिलाड़ियों को भी पहचान मिल रही है। अंतरराष्ट्रीय प्रतियोगिताओं में भारतीय खिलाड़ियों की उपस्थिति बढ़ी है। लेकिन प्रतिभा को पदक में बदलने की प्रक्रिया अभी भी कई स्तरों पर निरंतर निवेश और संस्थागत समर्थन मांगती है। खासकर महिला खिलाड़ियों के लिए यह प्रश्न और महत्वपूर्ण है। खेल केवल मैदान तक सीमित नहीं है। परिवार, सामाजिक अपेक्षाएं, सुरक्षा, शिक्षा और भविष्य की चिंता भी उनके रास्ते का हिस्सा होती हैं। जो खिलाड़ी इन सबके बीच आगे निकलती है, उसकी सफलता केवल व्यक्तिगत उपलब्धि नहीं रहती। वह एक सामाजिक संदेश भी अनती है कि अक्सर मिलने पर लड़कियां किसी भी क्षेत्र में ऊंचाई हासिल कर सकती हैं।

मीराबाई की यात्रा इसी बात का उदाहरण है।उन्होंने ग्लासगो की अपनी पुर्णनी जीत को भी याद किया। वहां सफलता के बाद उनकी आंखों में खुशी के आंसू थे।

इस बार एशियाई खेलों में पदक मिलने के बाद उन्होंने कहा कि वह नहीं रोईं। शायद हर खुशी आंसुओं से व्यक्त नहीं होती। कुछ खुशियां लंबे संघर्ष के बाद भीतर उतरकर एक शांत संतोष बन जाती हैं।

लेकिन मीराबाई के सामने अब एक और सवाल है—अगला लक्ष्य क्या है?

किसी खिलाड़ी का जीवन केवल उस दिन खत्म नहीं हो जाता जब वह पदक जीतता है। बल्कि कई बार पदक के बाद अपेक्षाएं और बढ़ जाती हैं। देश उससे अगली जीत को उम्मीद करने लगता है। मीडिया उसकी हर प्रतियोगिता को परिणाम की कसौटी पर देखने लगता है। प्रशंसक भूल जाते हैं कि पदक जीतने वाला शरीर भी थकता है, चोटिल होता है और उसे विश्राम चाहिए। इसलिए खिलाड़ियों को केवल पदक मशीन समझना खेल की आत्मा को छोटा करना है। मीराबाई ने अर्जुन पुरस्कार का भी उल्लेख किया है। उन्होंने कहा कि उनके पास यह पुरस्कार नहीं है और यदि सरकार उनके नाम पर विचार करती है तो उन्हें खुशी होगी। पुरस्कारों की अपनी प्रक्रिया और मानदंड हैं। फिर भी यह प्रसंग एक बड़े सवाल की ओर ध्यान खींचता है—क्या हम खिलाड़ियों के योगदान का मूल्यांकन केवल ताजा उपलब्धि से करते हैं, या उनके पूरे करियर को भी देखते हैं?

एक खिलाड़ी की पहचान केवल उसके सबसे हाल के पदक से नहीं बनती। उसके पीछे वर्षों का प्रदर्शन, निरंतरता और कठिन समय में की गई वापसी भी होती है। मीराबाई के मामले में यह निरंतरता साफ दिखाई देती है। उन्होंने असफलता के बाद वापसी की। चोट के बाद फिर प्रशिक्षण शुरू किया। विश्व मंच पर देश का प्रतिनिधित्व किया और अलग-अलग प्रतियोगिताओं में अपनी जगह बनाए रखी। एशियाई खेलों का रजत इसी लंबी यात्रा की एक महत्वपूर्ण कड़ी है।

यहां हमें उन खिलाड़ियों को भी याद करना चाहिए जो पदक से कुछ कदम दूर रह जाते हैं। चौथा स्थान पाने वाला खिलाड़ी भी उतनी ही मेहनत करता है। जो फाइनल तक नहीं पहुंचता, उसकी मेहनत कम नहीं होती। फर्क केवल इतना है कि पदक तालिका में कुछ नाम दर्ज होते हैं और बाकी पीछे छूट जाते हैं। मीराबाई का रजत उन अनगिनत खिलाड़ियों के लिए भी एक संदेश है कि असफलता अंतिम उतर नहीं होती।

(लेखक-कुमार कृष्णन)

दीनदयाल उपाध्याय : साधारण जीवन, असाधारण विचार

कुछ व्यक्तित्व अपने जीवन की लंबाई से नहीं बल्कि अपने विचारों की गहराई और कर्मों की व्यापकता से इतिहास में स्थान बनाते हैं। पं. दीनदयाल उपाध्याय ऐसे ही व्यक्तित्व थे। साधारण जीवन जीते हुए उन्होंने भारतीय राजनीति, समाज और अर्थचिंतन को भारतीय संस्कृति और परंपरा से जो?ने का प्रयास किया। उनका जीवन सादगी, अनुशासन, संगठन, राष्ट्रसेवा और वैचारिक प्रतिबद्धता का उदाहरण रहा। उनकी जयंती केवल एक राजनीतिक व्यक्तित्व को याद करने का अवसर नहीं बल्कि उनके विचारों और सार्वजनिक जीवन की भूमिका को समझने का अवसर भी है। 25 सितंबर 1916 को मथुरा जिले के नगला चंद्रभान गांव में जन्मे दीनदयाल उपाध्याय का बचपन कठिन परिस्थितियों में बीता। कम उम्र में ही उन्होंने माता-पिता को खो दिया और उनका पालन-पोषण रिश्तेदारों के संरक्षण में हुआ। कठिनाइयों के बावजूद शिक्षा के प्रति उनका लगाव कम नहीं हुआ। वे प?ई में अत्यंत प्रतिभाशाली थे और विभिन्न स्तरों पर छात्रवृत्तियां प्राप्त करते रहे। पिलानी में शिक्षा के बाद उन्होंने कानपुर के सनातन धर्म कॉलेज में अध्ययन किया। 1937 में छात्र जीवन के दौरान उनका संपर्क राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ से हुआ। आगे चलकर उन्होंने अपना जीवन पूर्णकालिक संगठनात्मक कार्य को समर्पित कर दिया। दीनदयाल उपाध्याय के लिए राजनीति केवल सत्ता प्राप्त करने का माध्यम नहीं थी, वे इसे समाज और राष्ट्र की सेवा का साधन मानते थे। 1951 में भारतीय जनसंघ की स्थापना के समय वे उसके संगठन निर्माण में महत्वपूर्ण भूमिका में आए और आगे चलकर पार्टी के अखिल भारतीय महामंत्री बने। डॉ. श्यामा प्रसाद मुखर्जी के निधन के बाद संगठन को मजबूत करने और देशभर में उसका विस्तार करने में उनका महत्वपूर्ण योगदान रहा। 1967 में वे भारतीय जनसंघ के राष्ट्रीय अध्यक्ष बने। उनकी सबसे महत्वपूर्ण वैचारिक देन ‘एकात्म मानववाद’ मानी जाती है। उनका विचार था कि मनुष्य को केवल आर्थिक

आवश्यकताओं के आधार पर नहीं समझा जा सकता। मनुष्य शरीर, मन, बुद्धि और आत्मा का समन्वित रूप है और उसके जीवन में भौतिक प्रगति के साथ नैतिक एवं आध्यात्मिक विकास भी आवश्यक है। इसी प्रकार व्यक्ति समाज से अलग नहीं है। व्यक्ति, समाज और राष्ट्र एक-दूसरे से जु? हुए हैं। इसलिए विकास का उद्देश्य केवल उत्पादन और आर्थिक आंक?ों को ब?ाना नहीं, मनुष्य और समाज के संतुलित विकास को सुनिश्चित करना होना चाहिए। दीनदयाल उपाध्याय का आर्थिक चिंतन भी इसी दृष्टि पर आधारित था। वे ऐसी अर्थव्यवस्था के समर्थक थे, जिसमें विकास का लाभ समाज के अंतिम व्यक्ति तक पहुंचे। इसी विचार से जु?ा उनका ‘अंत्योदय’ का सिद्धांत आज भी उनके चिंतन की प्रमुख पहचान है। उनका मानना था कि किसी भी विकास व्यवस्था की सफलता का वास्तविक पैमाना यह होना चाहिए कि समाज के सबसे कमजोर और अंतिम व्यक्ति के जीवन में कितना सुधार आया। इस दृष्टि से उनका चिंतन सामाजिक समावेशन और मानव-केंद्रित विकास की चर्चा में आज भी संदर्भित किया जाता है। दीनदयाल उपाध्याय केवल राजनेता और संगठनकर्ता ही नहीं, लेखक और पत्रकार भी थे। उन्होंने लेखनी को सामाजिक जागरण का माध्यम बनाया। उन्होंने ‘राष्ट्रधर्म’, ‘पाञ्चजन्य’ और ‘स्वदेश’ जैसे प्रकाशनों के माध्यम से राष्ट्र, समाज, संस्कृति, अर्थव्यवस्था और राजनीति से जु?े विषयों पर लिखा। उनके लेखन में सरल भाषा के साथ वैचारिक स्पष्टता दिखाई देती थी। उनका ‘पॉलिटिकल डायरी’ स्वभ भी चर्चित रहा। पत्रकारिता को लेकर वे तथ्यपरकता और जिम्मेदारी पर जोर देते थे। उपलब्ध सामग्री के अनुसार, वे समाचारों को संदर्भ से काटकर प्रस्तुत करने के विरुद्ध थे और पत्रकार की जिम्मेदारी को महत्वपूर्ण मानते थे। उनका व्यक्तिगत जीवन अत्यंत सादा था। उन्होंने अपना अधिकांश जीवन संगठन और सार्वजनिक कार्यों में लगाया। पर और प्रतिष्ठा के बावजूद उनका रहन-सहन सामान्य रहा। यही सादगी उनके व्यक्तित्व की विशेष पहचान बनी। उनके समर्थकों और सहयोगियों के संस्मरणों में उनके सहज व्यवहार, अनुशासन और कार्यकर्ताओं के साथ निकट संबंधों का उल्लेख मिलता है। वे संगठन को केवल पदों और संरचनाओं से नहीं, समर्पित कार्यकर्ताओं के माध्यम से मजबूत करने में विश्वास रखते थे।

दीनदयाल उपाध्याय का जीवन बहुत लंबा नहीं था। 11 फरवरी 1968 को मुगलसराय रेलवे स्टेशन के निकट एक रेलवे डिब्बे के पास उनका शव मिला। उनकी मृत्यु की परिस्थितियों ने लंबे समय तक प्रश्न ख? किए और यह घटना भारतीय राजनीतिक इतिहास की चर्चित घटनाओं में शामिल रही। उस समय वे भारतीय जनसंघ के राष्ट्रीय अध्यक्ष थे और उनके निधन से पार्टी को ब?ा झटका लगा। उनका राजनीतिक जीवन और दर्शन भारतीय राजनीति में लंबे समय तक चर्चा का विषय रहा है। उनके विचारों से सहमत और असहमत दोनों पक्षों के लिए यह महत्वपूर्ण है कि उनके चिंतन को उसके मूल संदर्भ में समझा जाए। एकात्म मानववाद, अंत्योदय, विकेंद्रीकरण, स्वावलंबन, सांस्कृतिक चेतना और राष्ट्र केंद्रित विकास उनके विचारों के प्रमुख पंथ रहे। उनकी रचनाओं और भाषणों में राष्ट्र, संस्कृति, अर्थव्यवस्था, लोकतंत्र और सामाजिक जीवन पर व्यापक चिंतन मिलता है। पं. दीनदयाल उपाध्याय का जीवन इस बात का उदाहरण है कि सीमित साधनों और कठिन परिस्थितियों में भी कोई व्यक्ति अपने विचार, अनुशासन और कर्म के बल पर सार्वजनिक जीवन में महत्वपूर्ण प्रभाव छो? सकता है। उन्होंने राजनीति को व्यक्तिगत महत्वाकांक्षा के बजाय संगठन और सेवा से जो?ने पर बल दिया। उनका एकात्म मानववाद व्यक्ति और समाज के संबंधों को समग्र दृष्टि से देखने का प्रयास था जबकि अंत्योदय का विचार विकास के लाभ को अंतिम व्यक्ति तक पहुंचाने की आवश्यकता पर केंद्रित था।

(लेखक- योगेश कुमार गोयल)

भारत-वेस्टइंडीज वनडे सीरीज 27 सितंबर से



तिरुवनंतपुरम में जुटी टीम इंडिया, रोहित-विराट की वापसी से बढ़ा रोमांच

नई दिल्ली, एजेंसी। भारत और वेस्टइंडीज के बीच 27 सितंबर 2026 से शुरू होने वाली बहुप्रतीक्षित व्हाइट-बॉल सीरीज को लेकर टीम इंडिया का जमावड़ा तिरुवनंतपुरम में शुरू हो गया है। शुभमन गिल की कप्तानी में भारतीय टीम वेस्टइंडीज के खिलाफ तीन वनडे और पांच टी20 अंतरराष्ट्रीय मैचों की सीरीज खेलेगी। वनडे टीम में रोहित शर्मा, विराट कोहली और रवींद्र जडेजा की वापसी ने सीरीज के रोमांच को और बढ़ा दिया है।

गिल की कप्तानी में उतरेगी टीम इंडिया- 27 वर्षीय शुभमन गिल भारतीय वनडे टीम की कप्तानी करेंगे। मुख्य कोच गौतम गंभीर ने गिल के नेतृत्व का समर्थन किया है। टीम में युवा और अनुभवी खिलाड़ियों का मिश्रण देखने को मिलेगा। रोहित शर्मा और विराट कोहली जैसे अनुभवी खिलाड़ियों की वापसी से युवा कप्तान को मैदान के अंदर और बाहर महत्वपूर्ण अनुभव का साथ मिलेगा। रवींद्र जडेजा की भी 50 ओवर के प्रारूप में वापसी हुई है। ऐसे में भारतीय टीम की बल्लेबाजी और ऑलराउंड विकल्पों में अनुभव बढ़ेगा।

एशियन गेम्स के कारण टीम में हुआ बदलाव- 2026 एशियन गेम्स के कारण भारतीय वनडे टीम में कुछ अहम बदलाव देखने को मिले हैं। श्रेयस अय्यर, ईशान किशन, जसप्रीत बुमराह और अक्षर पटेल जैसे प्रमुख खिलाड़ी एशियन गेम्स में हिस्सा ले रहे

हैं। उनकी अनुपस्थिति में रतुराज गायकवाड़ और युवा खिलाड़ी आकिब नबी को टीम में अवसर मिला है। ह सीरीज युवा खिलाड़ियों के लिए अंतरराष्ट्रीय स्तर पर अपनी जगह मजबूत करने का महत्वपूर्ण मौका भी होगी।

27 सितंबर को पहला वनडे

दोनों टीमों के बीच वनडे सीरीज का पहला मुकाबला 27 सितंबर 2026 को तिरुवनंतपुरम के ग्रीनफील्ड स्टेडियम में खेला जाएगा। इसके बाद दूसरा वनडे 30 सितंबर को गुवाहाटी और तीसरा वनडे 3 अक्टूबर को नए चंडीगढ़ में होगा। वनडे सीरीज के बाद दोनों टीमों पांच मैचों की टी20 सीरीज में आमने-सामने होंगी। टी20 मुकाबलों की शुरुआत 6 अक्टूबर से लखनऊ में होगी और आखिरी मैच 17 अक्टूबर को बेंगलुरु में खेला जाएगा।

टीवी और मोबाइल पर ऐसे देख सकेंगे मैच- भारत में सीरीज के मुकाबलों का टीवी पर सीधा प्रसारण स्टार स्पोर्ट्स नेटवर्क पर किया जाएगा। वहीं मोबाइल, लैपटॉप और स्मार्ट टीवी पर मैचों की लाइव स्ट्रीमिंग जियोहॉटस्टार के जरिए देखी जा सकेगी।

एशियन गेम्स में भारत ने रचा इतिहास, पुरुष बैडमिंटन टीम ने जीता पहला कांस्य रोइंग में सतनाम- सलमान ने भी दिलाया पदक

नई दिल्ली। एशियन गेम्स 2026 में भारतीय पुरुष बैडमिंटन टीम ने इतिहास रचते हुए पुरुष टीम इवेंट में पहली बार कांस्य पदक अपने नाम किया। सेमीफाइनल में भारत को चीन के खिलाफ 1-3 से हार का सामना करना पड़ा, जिससे फाइनल में पहुंचने का सपना टूट गया, लेकिन टीम ने कांस्य पदक पक्का कर लिया। इससे पहले क्वार्टर

फाइनल में भारत ने मेजबान जापान को हराकर इस स्पर्धा में अपना पहला पदक सुनिश्चित किया था। वहीं, रोइंग में भी भारत को कांस्य पदक मिला। पुरुष डबल स्कल्स में सतनाम सिंह और सलमान खान की जोड़ी ने 6८13.25 का समय निकालकर तीसरा स्थान हासिल किया। दोनों ने रेस के दौरान शानदार प्रदर्शन किया और अंतिम चरण में पीछे होने के



हांगझोऊ एशियन गेम्स में क्वाड्रपल स्कल्स टीम के साथ कांस्य पदक जीता था।

एशियाई खेल 2026 : भारतीय महिला हॉकी टीम ने थाईलैंड को 20-1 से पीटा

गिफू (इंएमएस)। ड्रैग-फ्लिकर दीपिका सहरावत के 9 गोलों की सहायता से भारतीय महिला हॉकी टीम ने एशियाई खेलों के अपने तीसरे मुकाबले में थाईलैंड को 20-1 से हराया। इस जीत के साथ ही भारतीय टीम ने टूर्नामेंट में अपनी अजेय बहुत बरकरार रखी है। इस मैच में पूरे समय भारतीय खिलाड़ी हावी रहीं। वहीं थाईलैंड की टीम बेबस नजर आयी।

इस मैच में दीपिका ने अपने सभी नौ गोल पेनल्टी कॉर्नर के जरिए किये। दीपिका के अलावा, नवनीत कौर ने चार मैदानी गोल किये जबकि युवा खिलाड़ी ऋजुा पिसाल ने हैट्रिक लगायी। कप्तान सलीमा टेटे, नेहा, लालरेमसियामी और साक्षी राणा ने भी एक-एक गोल कर भारत के स्कोर को 20 तक पहुंचा दिया।

मैच की शुरुआत से ही कोच जोर्ड मारिन की रणनीति के तहत भारतीय टीम ने बेहद



आक्रामक रख अपनाया। सीटी बजते ही भारतीय खिलाड़ियों ने थाईलैंड के हाफ में दबाव बनाना शुरू कर दिया और शुरुआती गोलों से मैच के पहले ही क्वार्टर में भारत ने विरोधी टीम का मनोबल तोड़ दिया।भारतीय मिडफील्डर्स ने गेंद पर पूरा नियंत्रण बनाए रखा और फॉरवर्ड लाइन को लगातार सटीक पास दिए, जिससे गोल पर लगातार हमले जारी रहे। थाईलैंड की टीम को पहले तीन क्वार्टरों तक

भारतीय गोलपोस्ट तक पहुंचने में भी संघर्ष करना पड़ा। हालांकि, मैच के चौथे क्वार्टर के आखिरी मिनटों में थाईलैंड को थोड़ी राहत मिली जब सुपांसा सामान्सो ने पेनल्टी कॉर्नर से एक सात्वना गोल दागने में सफलता पाई! यह जीत एशियाई खेल 2026 में भारतीय महिला टीम के दबदबे को स्पष्ट करती है। भारत ने इससे पहले भी उज्बेकिस्तान को 19-0 और इंडोनेशिया को 17-1 से हराया था, जिससे टीम का गोल अंतर अब बेहद मजबूत हो गया है। लगातार तीन धमाकेदार जीत दर्ज करने के बाद भारतीय टीम अब पूल-बी में शीर्ष स्थान पर मजबूती से काबिज है। इस बेहतरीन प्रदर्शन के बाद भारत का अगला मुकाबला शुक्रवार को मेजबान जापान से होगा, जिसे पूल स्टेज का सबसे अहम मुकाबला माना जा रहा है और यह सेमीफाइनल में जगह बनाने के लिए महत्वपूर्ण होगा।

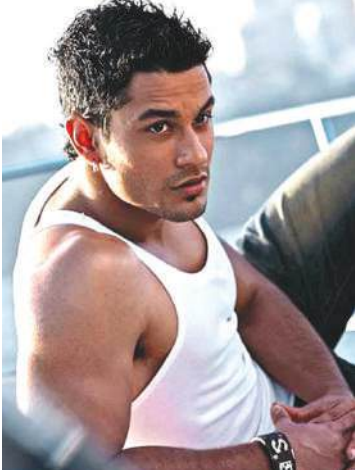
गुस्से में लिए फैसलों से वक्त के पहले समाप्त हुआ रायुड़ का कैरियर

हैदराबाद (इंएमएस)। पूर्व क्रिकेटर अंबाती रायुड़ भारतीय टीम के एक ऐसे बल्लेबाज रहे हैं। जो बेहद प्रतिभाशाली थे पर अपने मिजाज गर्म के कारण और अप्रत्याशित फैसलों से उनका करियर समय से पहले ही समाप्त हो गया। भारतीय क्रिकेट इतिहास में कुछ ही खिलाड़ी ऐसे होंगे, जिनकी पहचान उनके खेल के साथ-साथ उनके बागी तेवरों के लिए भी बनी हो और उनमें से अंबाती रायुड़ एक ऐसे ही खिलाड़ी हैं जिन्होंने कई बार अपने गुस्से और जल्दबाजी में लिए गए फैसलों से अपने ही करियर को नुकसान पहुंचाया। क्रिकेट के खेल में संयम का बहुत महत्व होता है, और रायुड़ के करियर को देखकर यह बात बखूबी समझी जा सकती है। कभी बीसीसीआई से पंगा, कभी विश्व कप टीम से बाहर होने पर तत्काल संन्यास का ऐलान, और कभी-कभी मैदान के बाहर भी गुस्से में आकर विवादों में घिरना। ये सभी घटनाएं उनके नाम के साथ जुड़ गईं। हालांकि, इन विवादों के बावजूद, एक बल्लेबाज के रूप में उनकी क्षमता पर कभी सवाल नहीं उठाया गया। वह एक बेहतरीन क्रिकेटर थे, जिनमें भारत के लिए लंबा खेलने की काबिलियत थी। उनके करियर का सबसे बड़ा मोड़ शायद 2019 एकदिवसीय विश्व कप टीम का चयन रहा। मध्यक्रम में भारत के सबसे भरोसेमंद बल्लेबाजों में से एक माने जा रहे रायुड़ को अचानक टीम से बाहर कर दिया गया और उनकी जगह ऑलराउंडर विजय शंकर को मौका मिला।



रंभा संभार

वाइब में की है अलग दिशा में एंटरटेन करने की कोशिश: कुणाल खेमु



मुंबई (यशभारत)। बॉलीवुड की कॉमेडी, एक्शन और जासूसी थ्रिलर फिल्म वाइब रिलीज हो चुकी है। अभिनेता कुणाल खेमु ने इस फिल्म के जरिए एक्टिंग, राइटिंग, डायरेक्टिंग और प्रोड्यूसिंग जैसे कई क्षेत्रों में हाथ आजमाया है। कुणाल खेमु ने फिल्म की रिलीज के बाद एक इमोशनल पोस्ट साझा किया है,

जिसमें उन्होंने अपने प्रशंसकों और टीम के प्रति आभार व्यक्त किया। अभिनेता का मानना ​​है कि इस फिल्म के जरिए उन्होंने सभी को अलग दिशा में एंटरटेन करने की कोशिश की है। कुणाल खेमु ने इंस्टाग्राम पर फिल्म के सीन्स को शेयर किया है, जिसमें फिल्म का गाना वाइब भी ऐड किया गया है। उन्होंने वीडियो शेयर कर लिखा, हार्दिक (कुणाल खेमु के किरदार का नाम) की शुभकामनाएं। अपनी पूरी टीम के साथ आने और माहौल बनाने के लिए दिल से शुक्रिया। अगर अभी तक किसी ने फिल्म नहीं देखी है, तो अपने प्लान में इसे जरूर शामिल करें और साथ मिलकर हम करेंगे और कर सकते हैं (थोड़ा मेटा है, समझने वाले समझ जाएंगे)। यह संदेश उनकी टीम वर्क और भविष्य के लिए उनकी आशा को दर्शाता है। अभिनेता ने बताया कि उन्होंने इस फिल्म के जरिए कुछ अलग करने की कोशिश की है। उन्होंने लिखा, कुछ अलग और नया करने की ये एक जनी रही है। एक्टिंग, राइटिंग, डायरेक्टिंग, प्रोड्यूसिंग। यकीन मानिए, मुझे आगे बढ़ाने वाली सिर्फ एक चीज है- फिल्मों के लिए मेरा कभी न खत्म होने वाला प्यार और आप सभी का शानदार प्यार और सपोर्ट जो आप हमेशा दिखाते आए हैं।

वहीदा रहमान बनेगी पुतलीबाई

मुंबई (यशभारत)। फिल्ममेकर अनुभव सिन्हा और सुधीर मिश्रा एक ऐसी कहानी को पर्दे पर लाने की तैयारी कर रहे हैं, जो महात्मा गांधी के जीवन से जुड़े एक बेहद महत्वपूर्ण और कम चर्चित दौर पर आधारित है। इस फिल्म में नेशनल अवॉर्ड विजेता अभिनेता मनोज बाजपेयी महात्मा गांधी की भूमिका निभा रहे हैं। अब हिंदी सिनेमा की दिग्गज अभिनेत्री वहीदा रहमान भी इस प्रोजेक्ट का हिस्सा बन गई हैं, जहां वह गांधीजी की मां पुतलीबाई का किरदार निभाती नजर आएंगी। फिल्म की कहानी महात्मा गांधी के जीवन के उन 21 दिनों पर केंद्रित है, जिन्हें इतिहास के एक महत्वपूर्ण अध्याय के तौर पर देखा जाता है। ऐसे में पुतलीबाई का किरदार कहानी में भावनात्मक स्तर पर खास महत्व रखता है। मेकर्स का मानना ​​है कि वहीदा रहमान जैसी अनुभवी अभिनेत्री की मौजूदगी इस किरदार को और गहराई देगी।

आज ही को अपना पहला दिन बनाएं- कृति सेनन

इंस्टाग्राम पर अपनी लेटेस्ट पोस्ट में मिमी फेम एक्ट्रेस कृति सेनन को पॉटरी (मिट्टी के बर्तन बनाने) की कला सीखते हुए देखा गया। अभिनेत्री ने अपनी बकेट लिस्ट से एक और चीज पूरी कर ली है, जिसे वह सालों से सीखना चाहती थीं। अभिनेत्री कृति सेनन ने फोटो-शेयरिंग ऐप पर एक प्रेरणादायक संदेश साझा किया।

उन्होंने लिखा, वह चीज जिसे आप सालों से करना या सीखना चाहते थे, जो हमेशा आपकी इस साल मुझे ये चीजें करनी हैं वाली लिस्ट में तो होती थीं, लेकिन आपने उसके लिए कभी समय नहीं निकाला? किसी दिन कहने के बजाय, आज ही को अपना पहला दिन (डे वन) बनाएं! मेरी लिस्ट में पॉटरी भी शामिल थी! नई स्किल सीखने की खुशीज कुछ अलग ही होती है! कांटेले 2 एक्ट्रेस ने अपनी पोस्ट का अंत यह कहते हुए किया कि उन्हें लगातार खुद को बेहतर बनाते रहना पसंद



है! कृति को हमेशा अपने कम्फर्ट जोन से बाहर निकलना और नई चीजें आजमाना पसंद है। यह पहली बार नहीं है जब उन्होंने अपनी बकेट लिस्ट से कोई बड़ा सपना पूरा किया हो। 2023 में, उन्होंने स्काईड्राइविंग में हाथ कहेता हुआ किया और अपनी बकेट लिस्ट से एक और चीज पूरी की



थी। वह अपनी बहन नूपुर सेनन के साथ दुबई गई थीं, जहाँ दोनों बहनों ने स्काईड्राइविंग करने का फैसला किया था। कृति ने अपना अनुभव इंटरनेट पर शेयर करते हुए अपने ऑफिशियल हैंडल पर एक वीडियो अपलोड किया था। वीडियो की शुरुआत में उन्होंने कहा था, हाँ, अभी पेट में थोड़ी घबराहट (बटरफ्लाइज) हो रही है।

इसके बाद, लुका लुथी की एक्ट्रेस ने आसमान में ड्राइव का खूब मजा लिया। जब उनसे पूछा गया कि उन्हें कैसा लगा, तो कृति ने कहा था, बहुत बढ़िया! यह बिल्कुल अजब पंछी जैसा महसूस हो रहा है। इस रोमांचक वीडियो के कैप्शन था, अपने कम्फर्ट जोन से बाहर निकल रही हूँ।

कुछ नया सीखने का सिलसिला कभी नहीं रुकता : अमिताभ बच्चन

बॉलीवुड के मशहूर अभिनेता अमिताभ बच्चन ने मेडिकल साइंस की बारीकियों और नैतिकता की परीक्षाओं से लेकर संगीत की असीम दुनिया तक उन कई सीखों को याद किया जो जुदिगी हमें देती रहती है। हिंदी सिनेमा के सुपर स्टार ने कहा कि हर दिन केबीसी के दायरे और जिंदगी के दायरों में कुछ नया सीखने को मिलता है, जो उनके लिए कभी न खत्म होने वाली प्रक्रिया है।

स्टार ने अपने ब्लॉग पर लिखा-हर दिन कुछ नया सीखनाज कुछ दूसरों के बारे में, लेकिन ज्यादातर अपने बारे मेंज हम कौन हैं, क्या हैं और कहाँ हैंज और सीखने का सिलसिला कभी नहीं रकता। मेडिकल साइंस की पेचीदगियां, ज्ञान की विविधता, नैतिकता की परीक्षाएं और हर दिन कुछ नया सीखना। सिर्फ केबीसी के दायरे में ही नहीं, बल्कि जिंदगी के दायरे में भी। यह दिखाता है कि अमिताभ बच्चन सिर्फ एक अभिनेता ही नहीं, बल्कि एक आजीवन विद्यार्थी भी हैं जो हर पल कुछ न कुछ सीखते रहते हैं। इसके बाद अमिताभ बच्चन ने संगीत के बारे में विशेष रूप से बात की। उन्होंने कहा, और फिर संगीत है जो कभी खत्म नहीं होता, कभी माफ नहीं करता, कभी रोकता नहीं, लेकिन हर पल एक चुनौती पेश करता है -



बच्चन का सहज और ज्ञानवर्धक अंदाज़ ही इस शो की लोकप्रियता का एक बड़ा कारण है। बिग बी, जिन्हें आखिरी बार टी. जे. ज्ञानवेल की फिल्म वेड्डेयन में देखा गया था, वे नितेश तिवारी की आने वाली बड़ी फिल्म रामायण-पार्ट 1 में नजर आएंगे। इस फिल्म में यश, रणबीर कपूर, साईं पल्लवी और सनी देओल भी होंगे।

फिल्म को देखने के बाद मुझे प्रेम से प्यार हो गया था: आयुष्मान



मुंबई (यशभारत)। बॉलीवुड अभिनेता आयुष्मान खुराना ने बताया कि उन्हें हिंदी सिनेमा से प्रेम 1994 की फिल्म हम आपके हैं कौन देखने के बाद हुआ था। अभिनेता आयुष्मान खुराना ने कहा, मुझे याद है कि मैंने हम आपके हैं कौन में कई परिवार थे और उस फिल्म को देखने के बाद मुझे प्रेम से प्यार हो गया था, मुझे हिंदी सिनेमा और हमारे परिवार की ताकत से प्रेम हो गया था। अभिनेता आयुष्मान ने यह भी बताया कि उन्हें अभी भी यकीन नहीं हो रहा है कि वे राजश्री प्रोडक्शन के हीरो बन गए हैं, जो उनके लिए एक सपने के सच होने जैसा है। यह बयान राजश्री फिल्मों के उनके व्यक्तिगत प्रभाव और भारतीय पारिवारिक मूल्यों के प्रति उनके जुड़ाव को दर्शाता है। अभिनेता ने राजश्री प्रोडक्शन हाउस के साथ अपने जुड़ाव पर बात करते हुए कहा कि यह रिश्ता सिर्फ उनका नहीं बल्कि, पूरे देश के परिवारों से जुड़ा है। उन्होंने कहा, राजश्री के साथ मेरा जो रिश्ता है, वो सिर्फ मेरा नहीं है, वो पूरे हिंदुस्तान का है, सभी परिवारों का है। सभी परिवारों को एक साथ लाने की जो जिम्मेदारी उन्होंने फिल्मों के जरिए उठाई है, मुझे लगता है यह बहुत ही खूबसूरत है। आयुष्मान का यह कथन राजश्री फिल्मों के सामाजिक और सांस्कृतिक महत्व को रेखांकित करता है। आयुष्मान खुराना ने डायरेक्टर सूरज बड़जात्या से जुड़ा एक किस्सा भी साझा किया, जो उनकी विनम्रता और भारतीय संस्कृति के प्रति सम्मान को दर्शाता है।

उन्होंने यह कैसे किया और खोज शुरू हो जाती है। मन और इंद्रियां जाग उठती हैं और एक खास एहसास छा जाता है। दिल और रूह को भर देता है, क्योंकि यही तो इसकी महानता की असली पहचान है। संगीत के प्रति उनकी यह भावना उनके गहरे कलात्मक जुड़ाव को दर्शाती है।

सिनेमा के यह दिग्गज कलाकार अभी कौन बनेगा करोड़पति में नजर आ रहे हैं, जो ऑरिजिनल ब्रिटिश फॉर्मेट हू वॉन्ट्स टू बी अ मिलियनेयर? का ऑफिशियल हिंदी वर्जन है। यह फॉर्मेट हू वॉन्ट्स टू बी अ मिलियनेयर? पूरेजाइजी के दूसरे शो जैसा ही है-कंटेस्टेंट से मल्टीपल-चॉइस सवाल पूछे जाते हैं और उन्हें चार संभावित विकल्पों में से सही जवाब चुनना होता है। साथ ही, अगर वे पक्का नहीं हैं तो वे लाइफलाइन का इस्तेमाल कर सकते हैं। अमिताभ

स्वामी, प्रकाशक, मुद्रक आशीष कुमार शुक्ला, पी. जी. इंफ्रास्ट्रक्चर एंड सर्विस प्रा. लि. राऊखेड़ी देवास रोड, इंदौर (म.प्र.) से मुद्रित एवं 22/1, पगनिसपागा पालसिकर कॉलोनी बालनिकेतन स्कूल के पास, इंदौर (म.प्र.) 452007 से प्रकाशित। संपादक अम्बरीश तिवारी * प्रबंध संपादक अमरीश पचौरिया* सलाहकार संपादक श्याम कटारे RNI No. MPHIN/26/A1896 फ़ोन - 9111201000 email - indoreyashbharat@gmail.com, (* पी.आर.बी.एक्ट के तहत समचार चयन के लिए जिम्मेदार) (न्यायालयीन क्षेत्राधिकार जबलपुर)